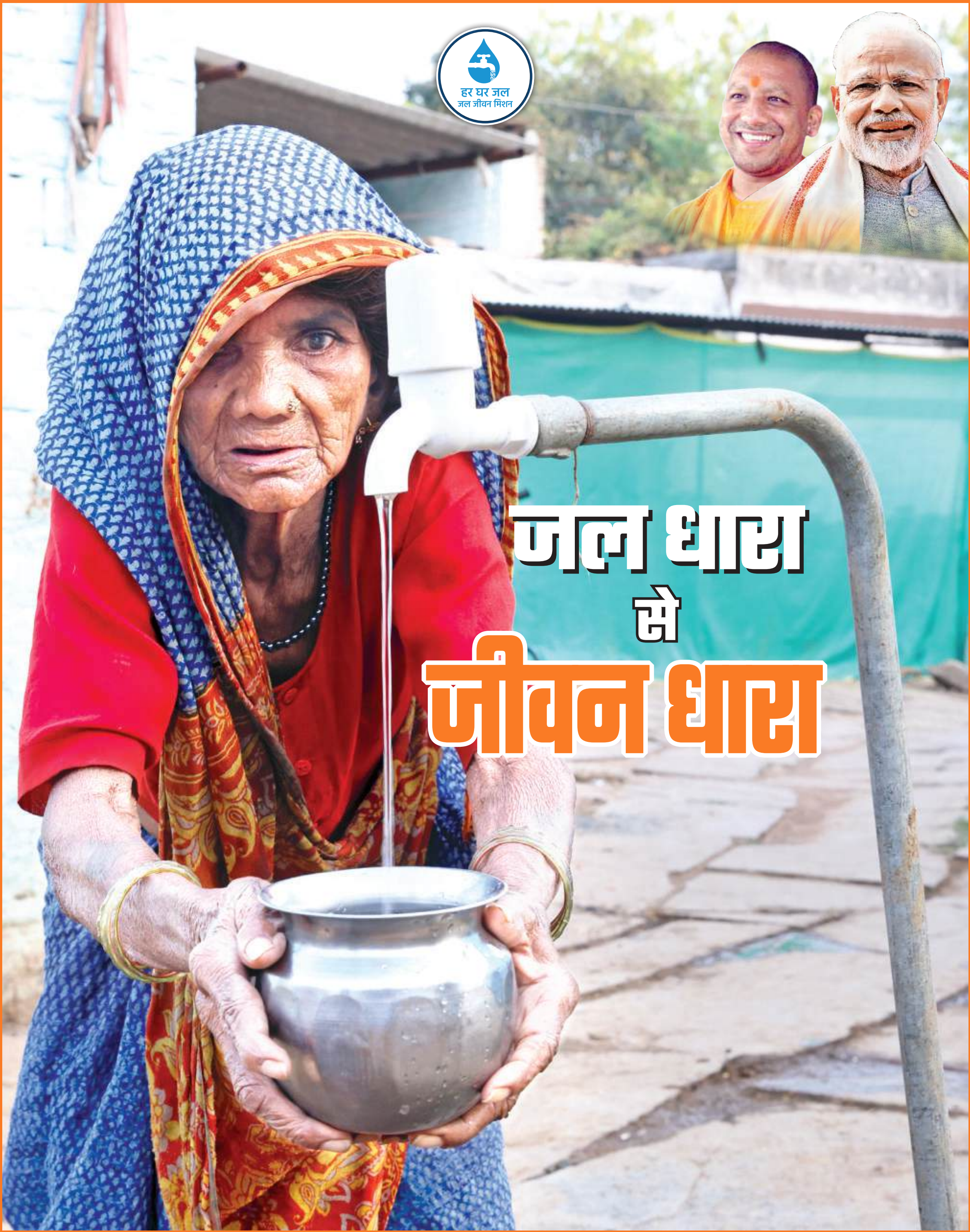

जल धारा से जीवन धारा

नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रस्तावना

स्वच्छ पेयजल तक पहुंच एक मूलभूत मानवाधिकार है, जो हर व्यक्ति के स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता के लिए अत्यंत आवश्यक है। लेकिन दुनिया भर में लाखों लोगों को आज भी इस बुनियादी आवश्यकता के लिए संघर्ष करना पड़ता है। हालांकि आशा की किरण अभी भी मौजूद है!

उत्तर प्रदेश में एक अनदेखी क्रांति चल रही है, ज़हां सरकार, एनजीओ और समाज से जुड़े नेताओं के संयुक्त प्रयास से गांवों और शहरों में लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाया जा रहा है। यह परिवर्तन न केवल लोगों के स्वास्थ्य में सुधार कर रहा है, बल्कि सामाजिक़ ढांचे को भी सशक्त बना रहा है। ये सफलताओं की कहानियां हमें यह याद दिलाती हैं कि स्वच्छ पेयजल तक पहुंच का प्रभाव व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों पर कितना गहरा हो सकता है। चाहे वे महिलाएं हों जो अपने समुदायों में नेतृत्व की भूमिका निभा रही हों, या बच्चे जो अब जल जनित बीमारियों की चपेट में आए बिना स्कूल जा सकते हैं। ये कहानियां हमें यह दिखाती हैं कि कैसे लोगों तक आसानी से साफ पानी की पहुंच, उनकी जिंदगी बदल देती है। लोगों तक स्वच्छ पेयजल की पहुंच की सफलता हमें जश्न मनाने का मौका तो देती है, लेकिन हमें अपनी एक और सफलता पर गर्व है। वह इससे ज्यादा बड़ी है। सौर ऊर्जा से संचालित जल योजनाओं की सफलता। इन योजनाओं ने न केवल ग्रामीण समुदायों के लिए जल तक पहुंच की विश्वसनीयता और स्थिरता में सुधार किया है, बल्कि ऊर्जा लागत में भी कमी आई है। विकास परियोजनाओं को पर्यावरण के अनुकूल भी बनाया है। इसके दीर्घकालिक परिणाम सबकी आंखों के सामने होंगे। काफ़ी तो अभी से दिख रहे हैं।

इन सफलताओं को साझा करके, हम एक सकारात्मक परिवर्तन की लहर पैदा कर सकते हैं जो हमारे समाज में दूर-दूर तक फैल जाएगी।

जल जीवन मिशन

बुंदेलखंड क्षेत्र में निर्माणाधीन जल शोधन संयंत्र

इंडेक्स

अब फिर अपने गांव वापस लौट आया है प्रदीप : उस बच्चे की दास्तान,..... P-06

सिद्धि अब पानी की वजह से नहीं नहीं होगी स्कूल से अनुपस्थित P-09

चैती की जीत : बैंकटी को फिर जीवंत करने की कहानी P-12

अब किसी मीना को नहीं चुकानी होगी पानी के लिए परिवार के वक्त की कीमत P-19

मेवालाल सेंध को याद है वह दौर, जब पानी की वजह से कुंवारे रह जाते थे कई P-23

घर तक पहुंची नल की टोटी बनी राम सरन और उनकी पत्नी के बुढ़ापे का सहारा P-26

अब नीलम को नहीं करना होगा पानी का इंतजाम, रोजगार भी मिलेगा P-28

रंग लाई मुहिम : घर-घर पहुंचा स्वच्छ पेयजल, काबू में आया जेई-एईएस P-32

अब किसी सीमा या सुमन को नहीं छोड़ना होगा पानी की P-36

अब लक्ष्मी के गांव में पानी के लिए कोई महिला गंजी नहीं होगी P-40

जब पानी की कमी ने ले ली शीला बुआ की जान P-42

सतही जल योजनाओं में, पानी को उपचारित करने और उसे पीने योग्य बनाने के लिए वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट (डब्ल्यूटीपी) का किया जारहा निर्माण।

सिलौटा मुस्तकिल ग्राम समूह पेयजल योजना
हर घर जल
जल जीवन मिशन

अब फिर अपने गांव वापस लौट आया है प्रदीप

उस बच्चे की दास्तान, जिसे पानी की कमी की वजह से छोड़ना पड़ा था अपना गांव

प्रदीप अब वापस लौट आया है। वह जब गया था तब कच्ची उम्र का था। तकरीबन आठ साल का रहा होगा। पानी की कमी की वजह से उसे गांव छोड़ना पड़ा था। दुश्वारियां इस कदर बढ़ गई थीं कि या तो जान बचाने के लिए बाहर ही जाना था या फिर बिना पानी के गांव में ही रहकर पानी की कमी का दंश झेलना पड़ता था। प्रदीप ने पानी किल्लत वाले जीवन की जगह पलायन को चुना। वह पानी की कमी की वजह से अपने गांव से दूर गया तो था, लेकिन उसे कभी भी अपना गांव भूला नहीं। हर रोज याद आता था। वह बस राह ही तो तक रहा था कि कब मेरे गांव के हालात इतना तो ठीक हो जाएंगे कि मैं वापस फिर अपने गांव जा सकूंगा। अब वह वापस आ गया है। क्योंकि जल जीवन मिशन से उसके गांव ही नहीं, घर तक नल से पानी पहुंच गया है। हां वही पानी, जिसकी किल्लत की वजह से उसे अपना गांव छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा था। बात है ललितपुर के बालाबेहट गांव की। प्रदीप कुशवाहा

यूपी के ललितपुर के बालाबेहट गांव के प्रदीप कुशवाह

इसी गांव में जन्मे और यहीं उनका बचपन बीता था। लेकिन पीने के साफ पानी की कमी की वजह से वह अपना गांव छोड़ने को मजबूर हो गए थे। पलायन के लगभग 20 साल बीतने के बाद उनके गांव में जल जीवन मिशन से पानी क्या पहुंचा, वे फिर लौट आए हैं। प्रदीप जब वापस आने की बाबात बात करते हैं तो उनके चेहरे की मुस्कान लंबी और लंबी होती जाती है। वह कहते हैं, जल जीवन मिशन ने हमें अपनी जड़ों से फिर जोड़ दिया है। पानी की कमी की वजह से हमें अपने गांव से दूर जाना पड़ा था, लेकिन अब जल जीवन मिशन ने गांव में पेयजल की व्यवस्था कर दी है। अब अपनी जड़े छोड़ने की वजह ही खत्म हो गई हैं। तो मैं तो वापस लौट आया हूं। और भी लोग वापस आ रहे होंगे। हमारी पीढ़ियां तो फिर भी चली गईं, आने वाली पीढ़ियों को नहीं जाना होगा। पलायन के लिए मजबूर नहीं होना होगा। वे अपना पूरा जीवन अपने ही गांव में, अपनी ही जड़ों से जुड़े रहकर बिता सकेंगे। यह हमारे लिए बहुत कुछ है। सब से बढ़कर। इससे ज्यादा और क्या कह सकता हूं कि यह मानो खोई हुई जिंदगी वापस लौटाने जैसा है।

प्रदीप जब पलायन की बात बताते हैं तो उनकी आंखों में अपना गांव छोड़ने का दर्द साफ झलकता दिख जाता है। आंखें डबडबा जाती हैं। कुछ सिकुड़ सी जाती हैं उस पल को याद करते हुए। कहने से पहले ही गला भर आता है। कंपकपाती सी आवाज में जो कि भाव में बहने की वजह से जिसमें कुछ भरभराहट भी है, कहते हैं - पानी की कमी के कारण हमें अपने दादा-दादी और दोस्तों से दूर जाना पड़ा था। लेकिन अब जल जीवन मिशन ने हमें अपने गांव लौटने का मौका दिया है। वह कहते हैं कि यह बालाबेहट की तस्वीर बदल देने जैसा है। पुरानी तस्वीर में सब कुछ था लेकिन पानी नहीं था। उसकी वजह से खुशियों पर परेशानियां हावी दिखती थीं। पानी का इंतजाम करने की वजह से चेहरे हमेशा थके थके ही लगते थे। लेकिन इस तस्वीर में वह पानी भी है, जिसकी वजह से तब दुश्वारियां झेलनी पड़ी थीं। चेहरे इस वाली तस्वीर में खुश लगते हैं। थके नहीं। गांव के हर घर में नल से जल पहुंच रहा है। अब किसी को पीने के साफ पानी के लिए मशक्कत नहीं करनी पड़ती है।

सीमा तोमर

शारदा देवी

पानी के साथ मिल रहा रोजगार

प्रदीप के बड़े भाई, मेहरबान कुशवाहा अब तक तो प्रदीप की सुन रहे थे, लेकिन वह अब अपने आप को कुछ कहने से रोक नहीं पाते हैं। वह उस पलायन के दौर को याद करते हुए बताते हैं, 'गांव के 40% से ज्यादा लोग यह जगह छोड़कर चले गए थे। लेकिन अब जल जीवन मिशन से जब सबके घरों में पीने का साफ पानी पहुंचने लगा है तो लोग वापस लौट रहे हैं। गांव में घर-घर नल से शुद्ध पेयजल पहुंचने के साथ रोजगार के अवसर भी मिल रहे हैं। अब ऐसी कोई वजह नहीं जिसकी वजह से पलायन के लिए मजबूर होना पड़े।'

कोमल, बालाबेहट गांव की एक बुजुर्ग महिला

सिद्धि अब पानी की वजह से नहीं नहीं होगी स्कूल से अनुपस्थित

उस युवती की आपबीती, जिसे बचपन में पानी का इंतजाम करने के लिए अपनी पढ़ाई तक से करना पड़ा समझौता

पानी की कमी क्या-क्या मुसीबतें नहीं लाती। किसी को अपना कीमती वक्त जाया करना पड़ता है, किसी को अपनी ऊर्जा। किसी को तकलीफ है कि उसकी जान हमेशा पानी के इंतजाम की वजह से जोखिम में रहती है तो किसी को उसकी सुंदरता घट जाने की। ऐसी ही तमाम दिक्कतों में से एक है बचपन छिन जाने की। पढ़ाई छूट जाने की। जिससे भविष्य संवर सकता था। यह पानी के इंतजाम में महज कुछ वक्त जाना नहीं, कुछ मेहनत ज्यादा होना ही नहीं बल्कि इससे कहीं ज्यादा था। इतना ज्यादा कि उसकी भरपाई तो मुमकिन ही नहीं है। सिद्धि ने यह दंश झेला है। सिद्धि उन सभी बालिकाओं प्रतिनिधित्व करती हैं, जिन्होंने पानी के समुचित प्रबंध न होने का नतीजा अपने भविष्य की कीमत पर भुगता है। लेकिन अब सिद्धि स्कूल जाती है। जल जीवन मिशन की बदौलत।

सिद्धि ललितपुर जिले के काकोरिया गांव से है। ये वही काकोरिया गांव है, जहां की महिलाओं ने पानी लाने की मशक्कत में अपने बाल तक गंवा दिए थे। सिद्धि तब बच्ची रही होगी जब उसकी मां, या चाची की उम्र की महिलाओं ने पानी लाने में की गई

सिद्धि ठाकुर अब खुश है क्योंकि वह अब हर दिन स्कूल जा सकेगी।

मशक्कत से अपने सिर के बालों को खो दिया होगा। वही बाल, जो उनकी सुंदरता को बढ़ाते थे। अब रोज स्कूल जाने वाली सिद्धि तब छोटी थी। गांव में पानी की समस्या थी। घर की बड़ी महिलाएं जब पानी के लिए निकलतीं तो सिद्धि को भी साथ ले जाती थीं। उन्हें लगता था कि सिद्धि भी साथ जाएगी तो कुछ अतिरिक्त पानी आ जाएगा। इससे पानी बीच दिन में ही खत्म होने की संभावना नहीं रहेगी। ऐसा अक्सर काकोरिया गांव की महिलाएं सोच लिया करती थीं। सिद्ध को भी इसी वजह से पानी लेने जाना पड़ा था। कई बार वह पानी लेकर घर वापस पहुंचने में उसे इतनी देर हो जाती थी कि स्कूल जाने का वक्त ही बीत चुका होता था। उसे स्कूल छोड़ना पड़ता था। सिद्धि को भले ही खराब बहुत लगता था, लेकिन वह कर भी क्या सकती थी। उसे पानी का इंतजाम करने जाना तो था ही।

अब सिद्धि ठाकुर के यहां जल जीवन मिशन से पानी आता है। वह कहती हैं, जल जीवन मिशन (जेजेएम) के कारण मेरी जिंदगी ही बदल गई है। अब मैं रोज स्कूल जाती हूं।

सिद्धि को खुशी है कि उसके पढ़ने की ललक अब पूरी हो पा रही है। पानी का इंतजाम अब इसमें आड़े नहीं आ रहा। सिद्धि कहती हैं, पढ़ाई ही नहीं, अब तो खेलने के लिए भी वक्त मिल जाता है।

सिद्धि तब पानी लाने के लिए की जाने वाली मशक्कत के दौर को याद करती हुए बताती हैं, पहले मुझे सुबह 4 बजे उठकर मीलों दूर से पानी लाना पड़ता था। स्कूल का समय आठ बजे होता था लेकिन घर में पानी का इंतजाम करने की वजह से अक्सर स्कूल पहुंचने का समय बीत जाता था। मुझे स्कूल छोड़ना पड़ता था। मुझे बहुत खराब लगता था, लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। इससे मुझे तब काफी नुकसान भी हुआ। मैं जिस रोज स्कूल नहीं जा पाती थी उस दिन घर पर रहकर खुद से ही बाकी बचे समय में पढ़ाई करती थी। लेकिन अगर मैं समय से स्कूल जा पाती तो शायद ज्यादा बेहतर होता।

हालांकि अब सिद्धि खुश हैं। वह कहती हैं, अब वह समय बीत गया है। अब तो घर तक नल से पानी आ रहा है। यह बदला हुआ वक्ता बहुत अच्छा है। अब मुझे स्कूल जाने और पढ़ाई करने के लिए पर्याप्त समय मिलता है। जल जीवन मिशन ने मेरी जिंदगी को आसान बना दिया है।

चैती की जीत : बैंकटी को फिर जीवंत करने की कहानी

चैती थारू समाज से आती हैं। श्रावस्ती जिले के बैंकटी में जन्मीं चैती अब अपने समुदाय के लिए आशा और परिवर्तन की पहचान हैं। उन्होंने अपने जीवन में अपार कठिनाइयों का सामना किया, खासकर जब विवाह के बाद वह वह अपने ससुराल बैंकटी पहुंचीं। लेकिन चैती मुसीबतों से डिगी नहीं। डटकर सामना किया। आज वह न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे समुदाय के लिए शक्ति स्तंभ बनकर उभरीं हैं।

बैंकटी, उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जिले में तराई क्षेत्र में स्थित एक छोटा सा गांव है। यह भारत-नेपाल सीमा के पास बसा है। यहां थारू जनजाति के लोग रहते हैं। 765 लोगों की आबादी वाले इस गांव में थारुओं के 116 परिवार निवास करते हैं। एक समय था जब समुदाय का जीवन बेहद कठिन और चुनौती भरा था। खेती ही ग्रामीणों के जीवन यापन का मुख्य स्रोत है। खेती करते और तमाम मुसीबतों को झेलते हुए यह जनजाति अपनी अनोखी सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं को अब तक बचाए हुए है।

बैंकटी में जीवन: संघर्ष की एक कहानी

बैंकटी में जीवन बहुत सारी चुनौतियों से भरा है। अधिकांश परिवार कच्चे मकानों में रहते हैं। मिट्टी और घास-फूस का इस्तेमाल करके इनके घर बनते हैं। गांव के ज्यादातर लोग तो खेती करते हैं। कुछ दिहाड़ी मजदूरी करके भी कमाते हैं। इनकी तमाम दुश्वारियों में सबसे बड़ी, पीने के साफ पानी की थी।

वर्षों से गांव वाले पानी की जरूरतों को पूरा करने के लिए शैलो हैंडपंपों पर निर्भर थे। हैंडपंपों में भी केवल 4 ही इंडिया मार्क-II पंप थे। तराई के क्षेत्र में

चैती, एक थारू महिला, अपने गांव में पंप चलाती हुई।

पानी की गुणवत्ता खराब होती है, जो अपने साथ तमाम बीमारियां लेकर आती है। यह गांव भी उससे अछूता नहीं था। पानी से फैलने वाली बीमारियों जैसे दस्त, हैजा, टाइफाइड और पीलिया का प्रकोप लगातार बना रहता था। प्रभावित होने वालों में सबसे ज्यादा बच्चे होते थे। गांव के अन्य परिवारों की तरह चैती का भी परिवार छोटी-मोटी खेती और मेहनत मजदूरी करके गुजर बसर कर रहा था। शुरुआत में चैती ने अपने पति की खेत में मदद की, लेकिन जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि उनके परिवार के भविष्य और गांव के समग्र कल्याण के लिए केवल खेती से बात नहीं बनेगी। इसके अलावा पीने के साफ पानी की कमी भी ऐसी समस्या उन्हें दिखी, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। चैती समेत गांव की तमाम महिलाएं पानी के लिए दूर तक जाती थीं। इतनी मेहनत से लाया गया पानी भी अच्छी गुणवत्ता का नहीं होता था। श्रम और समय उसे लाने में लगता था, सो अलग। चैती ने अपने बच्चों और पड़ोसियों के बच्चों को अक्सर दूषित पानी से बीमार होते देखा था।

जल जीवन मिशन से आई बैंकटी में बदलाव की बयार

जब जल जीवन मिशन ने बैंकटी में नल के माध्यम से पानी की आपूर्ति शुरू की, तो चैती ने इसमें बदलाव का एक अवसर देखा। उन्होंने समुदाय की बैठकों और योजना सत्रों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। नेतृत्व क्षमता को पहचानते हुए चैती को गांव की पहली महिला पंप ऑपरेटर बनाने के लिए चुना गया। यह ऐसी भूमिका है, जो सामान्यतः पुरुषों द्वारा निभाई जाती है। ऐसे में चैती को शुरुआत में संदेह की नजर से देखा गया। लोग यह समझते थे कि पंप ऑपरेटर की भूमिका में तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती है, यह काम पुरुष करते हैं, फिर चैती कैसे ही यह काम कर सकेगी? लेकिन चैती ने तो मानों सभी की आशंकाओं को धता बताने की ठान ली थी। जल जीवन मिशन (जेजेएम) से मिले प्रशिक्षण और फिर पति व गांव में उसके साथियों के सहयोग से, चैती ने गांव में पानी की आपूर्ति को संचालित करने व बनाए रखने का कौशल सीख ही लिया। चैती ने अपने हौसलों से न केवल पंप ऑपरेटर बनने की लड़ाई जीती, बल्कि वह अब बैंकटी की महिलाओं के लिए गर्व की वजह भी हैं और सशक्तीकरण की मिसाल भी। गांव को साफ पानी नियमित रूप से मिल रहा है, वह तो सोने पर सुहागा है। यानी, बैंकटी की सबसे बड़ी दिक्कत अब समाप्त हो चुकी है।

चैती की भूमिका: एक नई दिशा की ओर

चैती की भूमिका केवल पानी की व्यवस्था तक ही सीमित नहीं है। वह अपने साथी ग्रामीणों को सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता के बारे में भी सक्रिय रूप से बताती हैं। जल जीवन मिशन से पहले चैती जैसी महिलाएं हर दिन पानी लाने में घंटों बिताती थीं। लेकिन अब, चैती गांव में साफ पानी की उपलब्धता तो सुनिश्चित करवा ही रही हैं, साथ ही पानी लाने में लगने वाला घंटों का समय भी बचा रही हैं। इस समय का इस्तेमाल

महिलाएं शिक्षा और कमाई के साधनों में लगा रही हैं।

अपनी इस यात्रा को याद करते हुए चैती कहती हैं, 'प्रतिदिन पानी लाना थकाऊ और जोखिम भरा था। लेकिन मुझे पता था कि हमारे बच्चों के स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ पानी की आवश्यकता है। जब जल जीवन मिशन हमारे गांव आया, तो मैं समाधान का हिस्सा बनना चाहती थी। यह केवल पानी के बारे में नहीं था - यह हमारे पूरे गांव के लिए एक बेहतर भविष्य बनाने के बारे में था।'

चैती की कहानी महिला सशक्तीकरण और सामुदायिक नेतृत्व की दास्तान है। एक आदिवासी समुदाय से एक महिला पंप ऑपरेटर के रूप में आगे बढ़कर, उन्होंने न केवल अपने जीवन को बदल दिया है, बल्कि अपने गांव के कई अन्य महिलाओं के जीवन को भी परिवर्तन लाई हैं।

चैती की यात्रा हमें यह याद दिलाती है कि पानी की कमी और सार्वजनिक स्वास्थ्य जैसी चुनौतियों का समाधान अक्सर समुदाय के भीतर ही निहित होता है, जो व्यक्तियों की हिम्मत की प्रतीक्षा करता है। वह ऐसा कोई शख्स चाहता है, जो आगे आकर उनका नेतृत्व करे। बैंकटी में ऐसा चैती ने किया। अब गांव की स्थिति काफी सुधर गई है। साफ पानी की उपलब्धता से जलजनित बीमारियों की घटनाएं कम हो गई हैं।

स्वास्थ्य विभाग के आंकड़े देते हैं गवाही

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से देखें, तो इसका प्रभाव वास्तव में अद्भुत है। पानी से फैलने वाली बीमारियों की घटना में काफी कमी आई है, जो 2022 में 42,546 मामलों से घटकर 2023 में 38,026 मामलों और 2024 में 7,638 मामलों (जुलाई तक) तक हो गई है। इस कमी के परिणामस्वरूप मौतों की संख्या भी कमी दर्ज हुई है। 2022 में मौतों की संख्या 25 थी, जो 2023 में घटकर 11 और 2024 में 5 (जुलाई तक) रह गई है। (स्रोतः संचारी रोग अनुभाग, स्वास्थ्य विभाग, उत्तर प्रदेश)।

इसके अलावा, गोरखपुर मंडल में जापानी एन्सेफेलाइटिस और एक्यूट एन्सेफेलाइटिस सिंड्रोम के कारण कोई मौत नहीं हुई है। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जो स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के प्रयासों को दर्शाती है।

Har Ghar Jal
Jal Jeevan Mission

मीना देवी (सामने) और बैजपुर गांव की अन्य महिलाएं पानी भरकर लौट रही हैं

अब किसी मीना को नहीं चुकानी होगी पानी के लिए परिवार के वक्त की कीमत

उस महिला की आपबीती, जिसे पानी के इंतजाम में अपने परिवार के लिए भी वक्त निकालना मुश्किल था

एक ग्रहस्थ इंसान में तो चाहतें इतनी होती हैं कि वह उन्हें पूरा करने में अपना सारा वक्त लगा देता है। लेकिन गृहणी? उसकी चाहत तो दो जून की रोटी और परिवार के साथ अच्छे समय भर में ही पूरी हो जाती है। लेकिन उस महिला का क्या, जिसे अपनी जिम्मेदारियों की वजह से परिवार के लिए समय ही न मिलता हो। उनपर क्या ही बीतती होगी। लेकिन पानी की कमी ने महिलाओं को यह दंश भी झेलने पर मजबूर किया है।

बैजपुर इसी तरह का गांव है। यह उत्तर प्रदेश के झांसी जिले के बबीन ब्लॉक में पड़ता है। इस गांव के इतिहास का एक बड़े हिस्से में पानी की किल्लत से जूझने की दास्तानें दर्ज हैं। यूं तो यहां की महिलाओं ने तमाम दुश्वारियां झेली हैं, लेकिन पानी की कमी से बड़ी शायद ही कोई और रही हो। उन्हें न केवल पीने के लिए पानी का इंतजाम

करना होता था बल्कि घरेलू कामों के लिए भी उन्हें पानी बाहर से ही लाना पड़ता था। यह उनके लिए एक चुनौती थी। उन्होंने यह मुसीबत पीढ़ी दर पीढ़ी झेली है। पथरीले रास्तों पर मीलों चलकर जाना, पानी लाना, तकरीबन सभी महिलाओं की जिंदगी का एक हिस्सा रहा है।

इसी गांव में मीना देवी रहती हैं। तकरीबन दो दशक से ज्यादा वक्त इन्हें भी बीत चुका है, पानी के लिए ऐसी ही मशक्कत करते हुए। वह अपने बारे में बताती हैं, जब 20-25 साल साल पहले मेरी शादी हुई थी तब करीब 3-4 किलोमीटर तो रोज पानी के लिए जाना पड़ता था। परिवार के लिए पानी के इंतजाम में पूरा दिन बीत जाता था। मैंने अपने मायके में कभी पानी नहीं भरा, लेकिन यहां मुझे करना पड़ता था। तकलीफ बताते हुए मीना का गला रुंध आता है, लेकिन वह अपनी व्यथा यहीं कहना नहीं रुकतीं। वह बताती हैं, चाहे दिन हो या रात, अगर पानी की जरूरत होती तो हमें पानी के लिए पथरीले रास्तों से होकर जाना ही पड़ता था। हमें पानी को राशन की तरह इस्तेमाल करना पड़ता था। जरूरत से ज्यादा ही भंडार करके रखना पड़ता था। उसके इस्तेमाल से पहले सोचना पड़ता था। कई बार तो रोजमर्रा की जरूरतें भी पानी की बचत करने के लिए नजरअंदाज करनी पड़ती थीं। वह बेहद कठिन दौर था। मीना बताती हैं कि कुछ संभ्रांत परिवारों के पास अपने कुएं थे। हमें काफी मान-मनव्वल के बाद कुछ पानी उन कुओं से मिल जाता था।

मीना की इस दास्तान में बैजपुर गांव की तमाम महिलाओं की करुण कहानी है, जिनके जीवन का एक बड़ा हिस्सा तो केवल परिवार के लिए पानी का इंतजाम करने में ही बीत जाता था। इस जुगत के बाद उनके पास न तो परिवार के लिए वक्त होता और न ही अपने लिए।

हालांकि मीना और उनकी तरह इस मुसीबत में जीने वाली तमाम महिलाओं को तब राहत मिली है। जब जल जीवन मिशन से उनके घरों में नल से पानी पहुंचने लगा। जल जीवन मिशन ने उन्हें पानी की गुलामी से मुक्त कर दिया है। अब उनके पास आम महिलाओं की ही तरह परिवार के लिए वक्त है, अपने लिए समय है।

मीना देवी

मीना कहती हैं, अब मुझे अपने घर में नल के पानी की सुविधा मिली है। अब मुझे पानी भरने दूर नहीं जाना पड़ता। मेरे पास समय है। मैं इसे अपने परिवार को दे सकती हूं। मीना जब इस बदलाव की बात कहती हैं तो उनका चेहरा एक बार खिल उठता है। उनके चेहरे पर खुशी की यह झलक ही जल जीवन मिशन से महिलाओं के जीवन में आए बदलाव की वह लकीर है, जो वक्त के साथ और गाढ़ी होती जा रही है।

बैजपुर की महिलाएं स्वीकार करती हैं कि जल जीवन मिशन के आने से वे अब अपने परिवार, स्वास्थ्य और आर्थिक गतिविधियों को प्राथमिकता देने में सक्षम हैं। वे कहती हैं कि पीने के पानी के लिए मीलों दूर चलने की फिजूल कसरत से निजात मिली तो वे अब अपने बच्चों को ज्यादा वक्त दे पा रही हैं। बच्चे पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान लगा पाते हैं और घर के मर्द भी अपनी आजीविका के लिए ज्यादा वक्त निकाल पाते हैं। वरना तो हम पानी लाने में लगे रहते थे और इससे उनका भी जीवन प्रभावित होता था।

जल जीवन मिशन ने बदली दूसरे गांवों की भी तस्वीर

बैजपुर की तरह ही प्रदेश के तमाम गांवों में इस तरह के बदलाव की बयार बह रही है। जौनपुर जिले के सिरकोनी ब्लॉक के सेहमलपुर तरियारी गांव को ही इस तरह के उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है। इस गांव की रहने वाली सुशीला के पास भी मीना की तरह ही अपनी दुश्वारियों के बारे में बताने के लिए काफी कुछ है। उन यादों को साझा करते हुए उनकी आंखें नम हो जाती हैं। भीगी पलकों के साथ वह उस दौर को याद करती हैं, जिसे बीते अभी ज्यादा वक्त नहीं गुजरा है। वह कहती हैं, वह महज पानी नहीं, परिवार की जरूरतों का बोझ था, जिसे अपने कंधों पर लिए हर दिन मीलों चलना पड़ता था। चाहे कैसा भी मौसम हो या शरीर की स्थिति, सब दर्द भूल जाने पड़ते थे, क्योंकि वह ऐसा काम था कि करना ही था। क्योंकि बिना पानी के तो गुजारा होना नहीं था। हां, वे दिन बहुत थकाऊ थे।

अब जबकि जल जीवन मिशन से सुशीला के घर में पानी पहुंच रहा है तो वह स्वीकार करती हैं कि जल जीवन मिशन न केवल उनके लिए बल्कि उनकी जैसी तमाम महिलाओं के लिए एक वरदान से कम कुछ नहीं है। वह कहती हैं, हमारी जिंदगी अब बदल गई है। सुशीला की आवाज में आभार की वह नर्मी साफ महसूस की जा सकती है, जब वह कहती हैं, घर पर बिना किसी जद्दोजेहद के पानी आने से अब मैं खुद को सौभाग्यशाली मानती हूं। राहत महसूस करती हूं क्योंकि अब वे दिन नहीं रहे। चेहरे पर एक खुशी के साथ कहती हैं, अब मैं समय पर खाना बना सकती हूं और अपने परिवार के साथ इसका आनंद ले सकती हूं। जल जीवन मिशन ने मुझे शांति और स्वतंत्रता दी है।

सेहमलपुर तरियारी गांव की सुशीला

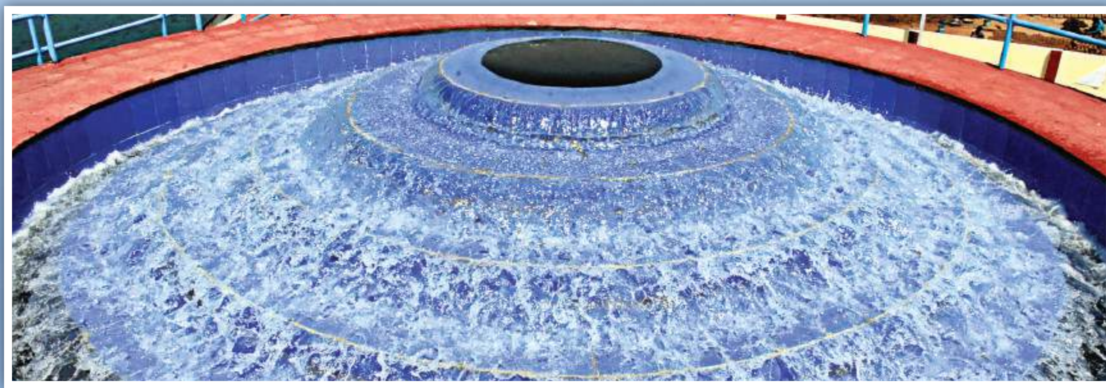

महोबा में संचालित वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट

वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट महोबा

मेवालाल सेंध को याद है वह दौर, जब पानी की वजह से कुंवारे रह जाते थे कई

तब रिश्ते के लिए पानी की सुलभता थी बड़ा पैमाना, लोग नहीं करते थे पानी की कमी वाली जगहों पर रिश्ते

पानी और शादी का क्या आपस में कोई संबंध है? शादियों के कार्ड में पाणिग्रहण संस्कार की बात लिखी होती है, लेकिन उसे आप पानी समझने की भूल मत करिएगा। उस पाणिग्रहण का अर्थ, हाथ पकड़ने से है।

हां तो बात यह है कि इस संबंध को आप तब ही समझ सकते हैं, जब आपका ताल्लुक बुंदेलखंड से हो। उत्तर प्रदेश के इस इलाके के किसी परिचित से भी अगर बात करते हैं तो भी आपको इस संबंध का एहसास हो जाएगा। वे अपने सामान्य जिक्र में भी ऐसे लोगों का नाम गिना देंगे, जो पानी न होने की वजह से कुंवारे रह गए। पानी की कमी ने बुंदेलखंड के कई गांवों के बासिंदों के सामने दो ही विकल्प छोड़े थे। या तो वे गांव छोड़कर कहीं और जा बसें। अगर उन्होंने ऐसा कर लिया होता तो उनकी शादियां हो जातीं। लेकिन जिन्होंने गांव चुना। अपने लोगों के बीच रहना चुना। उनमें से कई लोग इसी वजह से कुंवारे रह गए। लेकिन अब स्थितियां बदल गई हैं।

जल जीवन मिशन से उन गांवों में भी नल से पानी पहुंच रहा है, जहां पानी मुश्किल से लाना पड़ता था। कोसों दूर लोग जाते थे और पीने का पानी लाते थे। कई-कई गांवों में तो पीने और बाकी के इस्तेमाल का पानी भी मीलों दूर से लाना पड़ता था। ऐसे गांवों में जब पानी पहुंचा तो उन युवाओं के भी चेहरे खिल उठे, जो अब मान बैठे थे कि पानी की वजह से वे भी कुंवारे ही रह जाएंगे। हालांकि, पानी की कमी होने में उनकी कोई गलती नहीं थी। लेकिन शादियों के लिए पानी की उपलब्धता बुंदेलखंड में एक बड़ा कारण थी। जिन गांवों में पानी नहीं होता था, वहां लोग रिश्ता ही लेकर नहीं आते थे। लेकिन अब ऐसे भी गांवों में शादी के रिश्ते आने शुरू हो गए हैं। शहनाइयों की धुन सुनाई देने लग गई है, क्योंकि जल जीवन मिशन की वजह

मेवालाल सेंध

से अब उनके घरों तक पानी की पहुंच हो चुकी है।

बीतती उम्र की दहलीज पर खड़े युवाओं को यह योजना जितनी खुशी देती है, उतने ही लोगों के दर्द यह ताजा कर देती है, जिनको इसकी कमी की वजह से कुंवारा रह जाना पड़ा था। ऐसे बुजुर्गवार अपनी आपबीती बताते जरूर हैं। वे बताते हैं कि क्यों उन्हें पानी की अनुपलब्धता की वजह से कुंवारा रह जाना पड़ा था। हालांकि अब वे इस समस्या

के हल हो जाने के बाद कहते हैं, अब समस्या समाप्त हो चुकी है। अब युवाओं के लिए शादी के प्रस्ताव आ रहे हैं। यह खुशी की बात है।

बैजपुर गांव ऐसे ही गांवों में शामिल था जहां पानी के लिए मशक्कत करनी पड़ती थी। यहां पानी लाने के लिए महिलाओं को मीलों चलना पड़ता था। यही वजह थी कि यहां लोग अपनी बेटियों का रिश्ता करने में झिझकते थे। पानी की इसी कमी की वजह से मेवालाल सेंध कुंवारे रह गए। वह कहते हैं, जल जीवन मिशन के प्रयासों से उनके गांव के युवाओं के विवाह के प्रस्ताव आने लगे हैं। पहले इस गांव में बेटियों की शादी की सोचने के लिए भी मां-बाप हिचकिचाते थे। उन्हें लगता था कि यहां शादी कर दी तो बेटियों को पानी लाने की जिम्मेदारी उठानी पड़ेगी। कोसों दूर जाना पड़ेगा। पानी का बोझ सिर पर उठाना पड़ेगा। तमाम परेशानियां सहनी पड़ेंगी। जमींदारी के वक्त तो यह और भी बड़ी बात थी।

मेवालाल आगे बताते हैं, तब महिलाओं को घूंघट में रहना पड़ता था। पानी लाने के लिए कोसों दूर तक पैदल चलना पड़ता था। बारिश के मौसम में, क्षेत्र फिसलन भरा हो जाता था, और महिलाएं अक्सर फिसल जाती थीं। उन्हें चोट लग जाती थी। पानी के घड़े फूट जाते थे। सारा जीवन उसके बाद उनका तकलीफ में ही बीतता था। लोगों के पास इलाज कराने का प्रबंध भी नहीं था, लेकिन अब हम खुश हैं। महिलाओं को पानी के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता। उन्हें अपने घरों में ही पीने के साफ पानी की सुविधा मिल रही है।

मेवालाल कहते हैं कि, अगर पहले ही यह सुविधा होती तो कई युवाओं को बिना शादी किए नहीं रहना पड़ता। जो लोग पानी की कमी की वजह से या इस वजह से शादियां न होती देख गांव छोड़कर जाने को मजबूर हुए, वे अब भी हमारे साथ रहते। उन्हें ऐसे कदम उठाने को मजबूर नहीं होना पड़ता। मेवालाल कहते हैं, पानी की कमी की वजह से खेती में लगे लोगों का पलायन दूसरे गांवों में हो गया था। इनमें ग्वाली और फूलपुर भी शामिल थे। गांव के अलंबरदार भी पहाड़ी से नीचे एक अलग स्थान पर चले गए थे। लेकिन पानी की समस्या का समाधान होने के साथ, लोग अपनी जड़ों की ओर लौट रहे हैं। फिर से मुस्कुराहटें लौट आई हैं।

महोबा में निर्माणाधीन जल उपचार संयंत्र। (फाइल फोटो)

घर तक पहुंची नल की टोटी बनी राम सरन और उनकी पत्नी के बुढ़ापे का सहारा

एक ऐसे बुजुर्ग मां-बाप की कहानी, जिन्होंने बुढ़ापे में पानी का इंतजाम करते वक्त महसूस किया है बेटे की कमी का दर्द

किसी अपने के जाने का दर्द तो असहनीय होता है। तब और भी पीड़ादायक हो जाता है, जब उस व्यक्ति की कमी का अहसास रोज होने लगे। किसी खास बात से उसकी याद जुड़ी हो। इतनी खास बात कि उसके बिना जीवन जीना संभव ही न हो। पानी ऐसी ही खास चीज हो सकती है। यह कहानी एक ऐसे ही बुजुर्ग दंपत्ति की है, जिन्होंने असमय अपने बेटे को गवां दिया। अब बुढ़ापे में उनके लिए पानी का इंतजाम करना एक बड़ी चुनौती थी। बेटा होता तो शायद उन्हें इंतजाम खुद न करना पड़ता। मगर अब बेटा भी नहीं था और पानी का इंतजाम भी इस उम्र में उन्हें खुद करना था। तो जब-जब पानी की जरूरत होती, बेटा याद आ जाता था। आंखें भर आती थीं। और एक लंबा वक्त नियति को कोसने में बीत जाता था।

यह दर्द है महोबा जिले के शिवहर गांव में रहने वाले राम सरन और उनकी पत्नी का। महोबा भी बुंदेलखंड का ही एक जिला है, जहां ग्रामीणों ने पानी की किल्लत को अपनी किस्मत मान लिया था। राम सरन और उनकी पत्नी को

नल से पानी उनके घर पहुंचने पर दंपत्ति ने मनाई जल दिवाली

अब भी वह दिन याद है, जब नियति ने उनके बेटे को उनसे छीन लिया था। वह बुजुर्ग हो रहे इस दंपत्ति के जीवन का एकमात्र सहारा था। यह दंपत्ति तब दुख में बदहवास थी, क्योंकि उसकी तो मानों दुनिया ही उजड़ गई थी। उसका सहारा ही छिन गया था। कहते हैं कि वक्त के साथ घाव भर जाते हैं। दुख अपनी तकलीफें कुछ कम कर देता है। लेकिन राम सरन और उनकी पत्नी के मामले में ऐसा नहीं था। उम्रदराज हो रहीं राम सरन की पत्नी को अब अपने बेटे के जाने की और भी तकलीफ होती है। क्योंकि अब उसके घुटने जवाब दे रहे हैं। वह होता तो शायद उसे पानी के लिए ऐसा परेशान नहीं होना पड़ता। उसका बेटा उसके लिए पानी ला देता। जवाब देते घुटनों के साथ जिंदगी के लिए जरूरी पानी का इंतजाम उसके लिए और भी मुसीबत भरा होता जा रहा था।

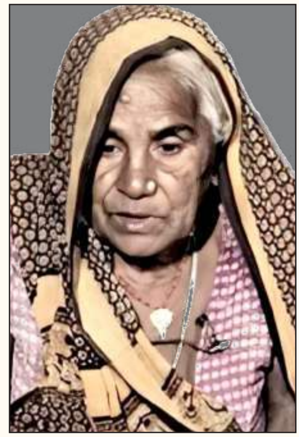

राम सरन और उनकी पत्नी

महज पानी की आसान उपलब्धता ही नहीं थी। यह उम्मीद की नई किरण भी थी। उम्मीद थी कि अब हम ही नहीं, आने वाली पीढ़ियां भी पानी के लिए परेशान नहीं होंगी। यह पानी की पहुंच, तमाम दुश्वारियों से आजादी थी।

जल जीवन मिशन से घर-घर पहुंचा पानी

जब यह दंपत्ति ऐसे दौर से गुजर रही थी। तब ही केंद्र सरकार की योजना, जल जीवन मिशन उसके गांव तक पहुंची। घरों तक टोंटी से पानी पहुंचने लगा। न केवल राम सरन और उसकी पत्नी बल्कि गांव में रहने वाले हर ग्रामीण के लिए यह

घर में नल कनेक्शन आया, तो लगा बेटा वापस लौट आया

नल से गिरते पानी की तरह ही राम सरन की पत्नी की आंखों से आंसू बहने लगते हैं। वह कहती हैं, इकलौते बेटे की मृत्यु का दर्द असह्य था। मन होता था कि जीवन यहीं खत्म हो जाए। परिस्थितियां ऐसा सोचने पर विवश कर देती थीं। लेकिन जल जीवन मिशन से मिल रहे पानी ने फिर से जीने की उम्मीद दी है। घर में बिना किसी जतन के पीने के लिए पानी की सुविधा किसी चमत्कार से कम नहीं है। अब पीने के पानी के लिए कोसों दूर नहीं जाना पड़ता। घंटों इंतजार नहीं करना पड़ता। ऐसा लगता है मानों, मेरा बेटा वापस आ गया है। कहते हुए वह पानी की टोंटी को छूती हैं। उनकी आंखों में एक चमक सी दिखती है। वह कहती हैं कि बेटे के न होने की तकलीफ तो अब भी है। लेकिन अब इस टोंटी से आते पानी की वजह से दर्द को कुछ राहत जरूर मिली है। लगता है कि जिंदगी ने जीने का एक और मौका दिया है। पानी की हर एक बूंद के साथ मैं अब इसके हर पल का आनंद लूंगी।

जल जीवन मिशन ने न केवल राम सरन और उनकी पत्नी की जिंदगी बदली है, बल्कि इसकी वजह से पूरे गांव में एक सकारात्मक परिवर्तन आया है। गांव के लोगों ने 'जल दिवाली'का त्योहार मनाया। यह त्योहार मिशन की वजह से घर में पानी आने की खुशी के के प्रतीक के तौर पर मनाया गया। यह मिशन न केवल पानी की समस्या का समाधान कर रहा है, बल्कि लोगों के जीवन में भी सकारात्मक परिवर्तन ला रहा है।

अब नीलम को नहीं करना होगा पानी का इंतजाम, रोजगार भी मिलेगा

एक ऐसी महिला की कहानी, जिसके दरवाजे तक जल जीवन मिशन से पानी तो पहुंचा ही, रोजगार भी मिला

वह खुशी महसूस करिए आप, जब आप पर बीत रही एक मुसीबत समाप्त हो जाए। इतना ही नहीं, मुसीबत का समाधान आपके लिए अवसर भी लाए। इस खुशी को नीलम से ज्यादा कौन महसूस कर सकता है। जिसे पानी के इंतजाम के झंझट से तो मुक्ति मिली ही, जल जीवन मिशन ने उसे रोजगार भी दिया। अब वह न केवल अपने गांव में पानी की उपलब्धता बनाए रख रही है बल्कि चार पैसे भी कमा रही है, जिससे उसके परिवार का आर्थिक स्तर बढ़ा है।

नीलम, निवासी नागपाली अयोध्या में गांव

जल जीवन मिशन न केवल ग्रामीण अंचल में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करा रहा है, बल्कि उसकी टोंटियों से रोजगार भी टपक रहा है। खासकर ग्रामीण महिलाओं के लिए। महिलाएं एक तरफ तो इससे अपनी मुसीबत से मुक्त हुई हैं, और उन्हें चार पैसे कमाने के साधन भी मिले हैं। जो महिलाएं पहले एकाकी जीवन जीवन जी रही थीं, वे अब आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प और एक उद्देश्य के साथ बाहर निकल रही हैं। गांव में उन्हें एक नई पहचान मिली है, क्योंकि वे अब प्रशिक्षित पंप ऑपरेटर और जल परीक्षक हैं। जल जीवन मिशन ने उन्हें फील्ड टेस्ट किट (एफटीके) से लैस किया गया है। वे अब काम कर रही हैं और उन्हें इसके लिए मानदेय भी मिल रहा है। ऐसी महिलाएं स्वीकार करती हैं कि जल जीवन मिशन की वजह से उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है।

जल जीवन मिशन ने जिन महिलाओं की जिंदगी बदल दी है, उनमें से एक हैं नीलम। वह भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या के नागपाली गांव में रहती हैं। वह कहती हैं, जल जीवन मिशन ने न केवल मेरे गांव में पानी पहुंचाया है, बल्कि मुझे रोजगार का अवसर भी दिया है। पिछले साल ही मुझे जल जीवन मिशन के तहत पंप ऑपरेटर के रूप में प्रशिक्षित किया गया था। इस प्रशिक्षण से मुझे अपने गांव में ही रोजगार का अवसर मिला। वह कहती हैं, जल जीवन मिशन की बदौलत, हमारे गांव में अब स्वच्छ पेयजल की सुविधा है। इससे ग्रामीण महिलाओं को दशकों से चली आ रही पीने के पानी के बंदोबस्त के संघर्ष से मुक्ति मिली है। इसे मैंने और मुझसे पहले की पीढ़ी की तमाम महिलाओं ने झेला है। पानी की किल्लत से घर तक पेयजल की पहुंच, गरीबी से रोजगार तक का परिवर्तन वाकई जादुई और शानदार है। नीलम की तरह प्रशिक्षित सभी महिलाओं को एक विशेष पंप ऑपरेटर टूल किट मुफ्त में दिया जाता है। इस किट में 300 मिमी पाइप, 130 मिमी वायर कटर, 200 मिमी प्लायर, 100 मिमी स्क्रूड्राइवर (टू-इन-वन), एक विंच सेट और एक टेस्टर शामिल है।

नीलम की तरह ही बदला उर्मिला का जीवन

अयोध्या की ही एक अन्य महिला पंप ऑपरेटर, उर्मिला यादव कहती हैं, हमें सशक्त महसूस होता है क्योंकि पंप ऑपरेटर के रूप में, हम अब महत्वपूर्ण काम संभाल रहे हैं और इसलिए

जिम्मेदारी की वह भावना और नई पहचान जो हमें मिली है, वह बहुत संतोषजनक है। इसके अलावा, हमें काम के लिए वेतन भी मिलता है और यह एक बहुत ही फायदेमंद और समृद्ध अनुभव बन गया है। वह कहती हैं, पंप ऑपरेटर प्रशिक्षण ने मुझे और मेरे जैसी कई अन्य महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बना दिया है।

ऐसी महिला लाभार्थियों ने स्वीकार किया है कि परिदृश्य बदल रहा है। वे कहती हैं, पहले यह आम बात थी कि हम महिलाएं पीने के पानी के लिए कई किलोमीटर दूर तक पैदल चलने को मजबूर थीं। जल जीवन मिशन के बाद अब परिस्थितियां बदल गई हैं। घर ही में पानी मिल रहा है। महिलाओं को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं। नई पहचान और इससे उन्हें असीम खुशी मिल रही है।

उर्मिला यादव,
अयोध्या निवासी।

अपने गांव को बीमारियों से बचा रहीं महिलाएं

ललितपुर के दोलावां गांव की रानी ने कहा, मुझे फील्ड टेस्ट किट में प्रशिक्षण मिला है और अब मैं पानी में आयरन, नाइट्रेट और फ्लोराइड जैसी विभिन्न अशुद्धियों की जांच कर सकती हूं। इससे मैं अपने गांव के लोगों को अशुद्ध पानी पीने से होने वाली विभिन्न बीमारियों से बचा सकती हूं। रानी कहती हैं, पहले, हम सिर्फ अपने घरों तक ही सीमित थे, लेकिन इस मिशन के साथ, हमें रोजगार भी मिला है। इस योजना के तहत हमें अपने गांव में पानी के 100 नमूनों की जांच करनी थी, उसमें से 20 नमूनों की जांच की जिम्मेदारी मुझे मिली है।

महिलाओं को सशक्त बना रहा जल जीवन मिशन

जल जीवन मिशन के अधिकारी बताते हैं, प्रदेश में 1.16 लाख से अधिक ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को पंप ऑपरेटर के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। महिलाओं की भागीदारी को मजबूत करने के लिए, प्रत्येक ग्राम पंचायत से महिलाओं को पंप ऑपरेटर के रूप में प्रशिक्षित किया जा रहा है। वे अपने गांव में तैनात की जा रही हैं, जिससे उन्हें एक स्थिर आय मिल रही है। इस पहल का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को आवश्यक उपकरणों से लैस करना है, जिससे वे पंप ऑपरेटर के रूप में अपने कर्तव्यों का कुशलता से पालन कर सकें।

रानी,
डोलावन,
ललितपुर

फील्ड टेस्टिंग किट (एफटीके) का उपयोग करने में प्रशिक्षित ये महिलाएं अपने गांवों में जल की गुणवत्ता और आपूर्ति की संरक्षक बन गई हैं।

रंग लाई मुहिम : घर-घर पहुंचा स्वच्छ पेयजल, काबू में आया जेई-एईएस

अब जल जनित बीमारियों से नहीं छिनेगा बचपन

बात साल 2005 की है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में जापानी एन्सेफलाइटिस (जेई) और एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिंड्रोम (एईएस) के कारण 6,000 से ज्यादा बच्चों की मौत हो गई थी। प्रदेश ही क्या देश की संसद तक इस घटना से हिल गई थी। उस साल 1,400 से ज्यादा बच्चे इस बीमारी की चपेट में आकर अपनी जान गंवा चुके थे। इस घटना के प्रभाव क्षेत्र का केंद्र बिंदु गोरखपुर था। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तब गोरखपुर के सांसद थे। उन्होंने इस मुद्दे को संसद में पुख्ता तौर पर रखा और इससे निपटने की योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। नीतियां तो बनीं, प्रयास भी हुए, लेकिन मौतों का यह सिलसिला थमने का नाम ही नहीं ले रहा था। साल 2017 आते-आते कुल मौतों का आंकड़ा 50,000 के पार पहुंच गया था।

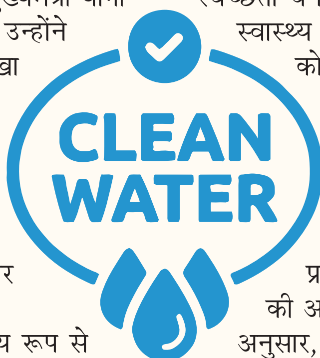

हालांकि अब परिस्थितियां अकल्पनीय रूप से बदल चुकी हैं। पिछले दो वर्षों में, यानी 2022 और 2023 में बहराइच और कुशीनगर में केवल एक-एक मौतें इस बीमारी से दर्ज हुई हैं। इसके अलावा, कहीं और भी जेई से संबंधित कोई मौत नहीं हुई है। एईएस के मामलों में भी 99% तक की कमी आई है। इन आंकड़ों की एक बड़ी वजह, 'जल क्रांति' (वॉटर रेवोल्यूशन) है, जिससे हर घर में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया गया। इसकी वजह से इस घातक बीमारी के प्रसार को नियंत्रित किया जा सका है।

उत्तर प्रदेश में जापानी एन्सेफलाइटिस (जेई) का पहला मामला 1978 में सामने आया था। शुरुआती दो दशकों में, इस बीमारी से प्रभावित लोगों में से 30% से अधिक की मौत हो गई। उल्लेखनीय रूप से, उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिले सबसे अधिक प्रभावित थे, जहां बच्चे सबसे अधिक कमजोर थे। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, यह बीमारी क्यूलेक्स प्रजाति के मच्छरों के काटने से फैलती है, जबकि एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिंड्रोम (एईएस) एक प्रकार का मस्तिष्क बुखार है।

बीमारी से निपटने के लिए, राज्य सरकार ने प्रभावित क्षेत्रों में स्वच्छ पानी की उपलब्धता बनाए रखने और स्वच्छता बनाए रखने के लिए एक योजना शुरू की। स्वास्थ्य विभाग ने भी अपने टीकाकरण अभियान को तेज किया। जल जीवन मिशन की 'हर घर नल से जल' योजना ने प्रत्येक घर में स्वच्छ पेयजल की पहुंच तय की। इससे बीमारी के प्रसार को कम किया गया।

जैसा कि स्थिति गंभीर थी और सरकार की प्राथमिकता सूची में थी, पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्रभावित जिलों में नल के पानी की आपूर्ति में तेजी आई। जल जीवन मिशन के अनुसार, प्रभावित जिलों में 85% से 92% घरों में नल के पानी के कनेक्शन प्रदान किए गए हैं।

स्वास्थ्य विभाग के 13 अगस्त 2024 तक के आंकड़ों से पता चलता है कि उत्तर प्रदेश में जापानी एन्सेफलाइटिस (जेई) और एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिंड्रोम (एईएस) के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया है। गोरखपुर में, जहां लगभग 92.13% घरों में अब नल के पानी की पहुंच है, वहां इस साल जेई से संबंधित कोई मौत नहीं हुई है जबकि 2018 में तीन मौतें दर्ज की गई थीं। इसी तरह, महराजगंज में 87.83% और बस्ती में 86.53% घरों में नल के पानी के कनेक्शन हैं, और इस साल जेई और एईएस से कोई मौत नहीं हुई है। सिद्धार्थ नगर में 13 अगस्त तक 85.06% नल के पानी के कनेक्शन हासिल किए गए हैं, और इस साल कोई मौत नहीं हुई है, हालांकि

2018 में चार मौतें हुई थीं।

कुशीनगर में 90.73% की टैप वॉटर कनेक्टिविटी के साथ, इस वर्ष भी शून्य मौतें दर्ज की गई हैं, जो 2018 में दो मौतों की तुलना में एक महत्वपूर्ण सुधार है। संत कबीर नगर में 89.20% घरों में नल से जल पहुंच रहा है। वहां भी 2024 में कोई मौत नहीं हुई। बलरामपुर में 93% और बहराइच में 92.66% ग्रामीण घरों में अब नल के पानी की सुविधा है। यह डेटा सार्वजनिक स्वास्थ्य में एक महत्वपूर्ण सुधार को चिह्नित करता है। नल के पानी की पहुंच में विस्तार ने जापानी एन्सेफलाइटिस (जेई) और एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिंड्रोम (एईएस) के मामलों में कमी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो इस सार्वजनिक स्वास्थ्य पहल की प्रभावशीलता को दर्शाता है। स्वास्थ्य विभाग मानता है कि साफ पानी की उपलब्धता की वजह से जेई और एईएस के मामलों में कमी आई है। पीने के लिए साफ पानी की वजह से जलजनित संक्रमणों का प्रसार कम हुआ है। शरीर में पर्याप्त पानी होने की वजह से लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली भी मजबूत हुई है। प्रतिरक्षा बेहतर होने से लोग जेई और एईएस से कम प्रभावित हो रहे हैं। नमामि गंगे और ग्रामीण जल आपूर्ति विभाग के अपर मुख्य सचिव अनुराग श्रीवास्तव कहते हैं, स्वच्छ पानी की उपलब्धता ने बीमारियों के प्रसार को कम किया है। हम जल्द ही 100% घरों में नल के पानी की आपूर्ति करने का अपना लक्ष्य हासिल करेंगे। स्वच्छ पानी स्वस्थ जीवन के लिए प्राथमिक आवश्यकता है। हम इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

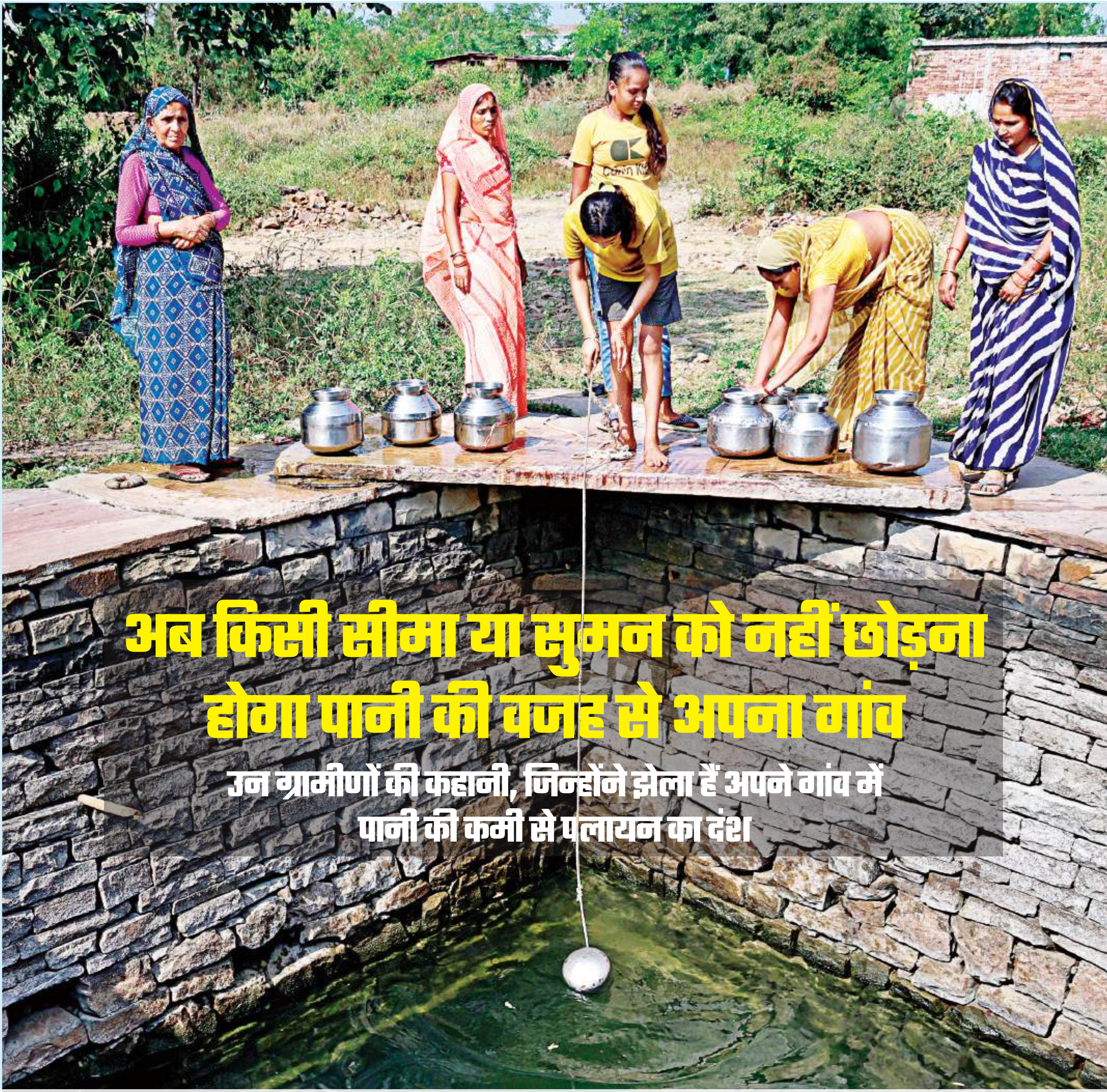

अब किसी सीमा या सुमन को नहीं छोड़ना होगा पानी की वजह से अपना गांव

उन ग्रामीणों की कहानी, जिन्होंने झेला है अपने गांव में पानी की कमी से पलायन का दंश

अंग्रेजों ने एक वक्त शिमला को अपनी ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया था। गर्मियां इस कदर पड़ती थीं कि अंग्रेज उससे परेशान होकर अपने लावलश्कर के साथ काम काज चलाने शिमला चले जाया करते थे। यह तो संपन्न वर्ग की बात है। क्या आपने ऐसे गांव के बारे में सुना है, जहां के लोग गर्मियों में पानी की कमी वजह से गांव छोड़ देते हैं। ऐसे गांव में चले जाते हैं, जहां पीने का पानी मिल सके। जैसे ही पानी की कमी पूरी हो जाती है, वे अपने गांव लौट आते हैं। नहीं, तो बालाबेहट गांव के बारे में आपको जानना चाहिए। इस गांव की कहानी सुननी

चाहिए यहां के बाशिंदों से। जानना चाहिए कि यहां के लोगों ने पानी की वजह से क्या क्या तकलीफें सहीं।

बालाबेहट गांव में गर्मियों का आना अपने साथ नई चुनौतियां लेकर आता था। पीने के पानी की किल्लत इस कदर बढ़ जाती थी कि लोग अपना घर छोड़कर वह ठिकाना तलाशते थे, जहां पीने को पानी मिल सके। इसी गांव की सुमन उस दौर के बारे में बताती हैं, 'लोग गर्मियों में शहरों में जाकर मजदूरी करते थे या उन रिश्तेदारों के यहां चले जाते थे, जिनके यहां पानी की किल्लत नहीं होती थी।'

इसी गांव की सीमा तोमर खुद भी उन लोगों में शामिल थीं, जो गर्मियों में कहीं और जाकर गुजर बसर करती थीं। वह बताती हैं, 'गर्मियों में हमें अपने घर छोड़ने पड़ते थे क्योंकि कुएं भी सूख जाते थे। टैंकर से पानी लेना बहुत महंगा पड़ता था। 10 रुपये में 3 बर्तन भरकर पानी मोल मिलता था। पानी भी अच्छा नहीं होता था।' गांव के लोग बताते हैं कि गर्मियों में चारो कुएं सूख जाते थे। अगर किसी गर्मी में नहीं भी सूखते थे तो भी उनका स्तर इतना कम हो जाता था कि हम पानी नहीं निकाल सकते थे। महिलाएं और बच्चे बताते हैं कि तब उन्हें पानी लेने के लिए कई किलोमीटर दूर जाना पड़ता था। स्थिति इतनी खराब हो जाती थी कि बेजुबान जानवरों को भी पानी देने

से पहले कई बार सोचना पड़ता था।

जल जीवन मिशन ने बदल दी बालाबेहट की तस्वीर

अब जल जीवन मिशन से गांव के हर घर में नल कनेक्शन के जरिए पानी पहुंचने के कारण बालाबेहट में पानी की कमी नहीं है। पानी की किल्लत की वजह से लोग अब गांव छोड़कर शहरों में मजदूरी नहीं करते। राजा भाई तोमर बताते हैं, 'अब हमें पानी की कमी नहीं है। हम अपने खेतों में पानी दे सकते हैं और पीने के लिए भी पानी मिल रहा है।'

घर-घर पहुंचा नल से जल, तो रिश्तें हुए बेहतर

जल जीवन मिशन से न केवल पानी की कमी दूर हुई है, बल्कि पलायान का दंश भी खत्म हुआ है। परिवारों में खुशहाली आई है। एक महिला कहती हैं, 'जब पानी की किल्लत थी तो मेरे पति और मैं अक्सर लड़ते थे क्योंकि उसकी वजह से खाना बनाने में देरी हो जाती थी। लेकिन अब जल जीवन मिशन से हमारे घरों में टोंटी से पानी भी पहुंच रहा है। हमारे रिश्ते भी पहले से बेहतर हो गए हैं।'

पानी से थी शादी में अड़चन

गांव में पानी किल्लत इस कदर थी कि कोई यहां अपनी बेटी ब्याहने को तैयार नहीं होता था। गांव के लड़कों के लिए शादी की बात जब भी चलती तो लड़की की तरफ से सवाल खड़ हो जाता था कि 'क्या आपके घर में बोरवेल है?' उत्तर न में मिलते ही शादी कैंसिल।

एक महिला इस मसले पर बताती हैं, 'इस गांव में साल के बारहों महीने पानी आसानी से उपलब्ध नहीं होता था। खासकर गर्मियों के मौसम में तो पानी के लाले पड़ ही जाते थे। इसलिए कोई भी अपनी बेटी का विवाह हमारे बेटों से नहीं करना चाहता था। लेकिन अब जल जीवन मिशन के कारण गांव में पानी की समस्या दूर हो गई है और विवाह की समस्या भी नहीं रही।'कुंजन सिंह कहती हैं, अब हमारे घरों में पानी आ गया है, इसलिए विवाह की समस्या भी हल हो रही है। यह गांव के लोगों के लिए बड़ी राहत है।

अब अशुद्ध जल पीने की नहीं होगी मजबूरी

बकौल कुंजन, पहले साफ पानी की व्यवस्था नहीं थी। किल्लत के वक्त या तो टैंकर का पानी मिलता था या फिर किसी ऐसे स्रोत से पानी लाना पड़ता था, जिसके साफ होने की गारंटी नहीं थी। लेकिन मजबूरी में लोग वही पानी लाने को मजबूर थे। वह पानी लोगों को बीमार कर देता था। कुएं और तालाब भी तब साफ नहीं थे। सांप, मछली और केकड़े उसमें दिखते थे, सभी को पता होता था, लेकिन तब क्या ही किया जाता। अगर वहां से पानी न भरते तो कोसों दूर पानी लेने जाना पड़ता। या पैसे खर्चने पड़ते। सभी को पता था कि वह पानी पीने के लायक नहीं है लेकिन पानी न होने से तो बेहतर ही था कि कुछ तो मिले। यह एक बड़ी समस्या थी। इससे लोगों का जीवन हमेशा खतरे में था। लेकिन अब जल जीवन मिशन के कारण गांव में स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था हो गई है। अब कम से कम कोई पानी की वजह से तो खतरे में नहीं है। अब हमें स्वच्छ पेयजल मिल रहा है और हमारे स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। यह हमारे लिए बड़ी राहत है।

अब लक्ष्मी के गांव में पानी के लिए कोई महिला गंजी नहीं होगी

कहानी उस महिला की, जिसने पानी लाने की मशक्कत में खो दिए अपने बाल

किसी भी महिला के लिए उसके बाल एक अनमोल गहने की तरह होते हैं। अनमोल हों भी क्यों न, जब न जाने कितने कवि और शायर महिलाओं की सुंदरता का बखान करते हुए उनकी जुल्फों का जिक्र करना नहीं भूलते। बल्कि कह सकते हैं कि महिलाओं के सौन्दर्य की व्याख्या उनके बालों से ही शुरू होती है। ऐसे में कल्पना कीजिए उन महिलाओं की जिनके बाल सिस्टम की अनदेखी में झड़ गए। ये अनदेखी थी घरों तक स्वच्छ पेयजल न मुहैया करा पाने की। मगर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल निर्देशन और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में चलाए गए जल जीवन मिशन के जरिए महिलाओं और उनके परिवार के लिए अभिशाप बन चुकी पानी की दिक्कत अब दूर हो गई है। घर-घर नल से जल पहुंचने से अब किसी भी महिला को पानी ढ़ोने की वजह से असमय अपने बालों से हाथ नहीं धोना पड़ेगा।

पानी ढ़ोने में झड़ गए लक्ष्मी के बाल

ये कहानी ललितपुर जिले के काकोरिया गांव की लक्ष्मी और उनकी जैसी तमाम महिलाओं की है। यहां की महिलाएं बीते कई साल से बाल झड़ने की समस्याओं से जूझ रही थीं। बालों का झड़ना गंजेपन में तब्दील हो जा रहा था। इस समस्या के शुरुआती चरण में महिलाओं के सिर के बाल पतले होते जाते थे। कुछ समय बाद बाल और पतले होते जाते, इस कदर कि वे गंजेपन का अहसास कराने लगते थे। गंजेपन के चकत्ते बढ़ते और बढ़ते जाते थे। इतने कि समूचा सिर गंजा हो जाता था। तमाम खोजबीन में काफी मशक्कत के बाद पता चला कि गंजेपन की असल दिक्कत पानी है। दरअसल, पीने का पानी लाने के लिए महिलाओं को घड़े या मटके सिर पर रखने होते थे। महिलाओं को पानी के मटके सिर पर रखकर रोजाना एक अच्छी खासी यात्रा करनी पड़ती थी। इस दरम्यान बार-बार घड़ों या मटकों को व्यवस्थित करने में बाल टूटते थे जोकि एक समय के बाद एक खास जगह पर गंजेपन की शक्ल ले लेते थे। महिलाओं के बालों को उनके आभूषण की तरह देखा जाता है। ऐसे में पानी की कमी की वजह से उन्हें खो देने का दर्द महिलाएं बखूबी समझ सकती हैं।

काकोरिया गांव की महिलाएं वर्षों से सूर्योदय से पहले उठती थीं। उठते ही वे पानी लेने के लिए निकल जातीं थीं। यह उनका रोज का काम था। तेज धूप, घड़ों का वजन और बेहिसाब चलने से उनके बालों पर असर पड़ा। भारी घड़ों के लगातार घर्षण से बालों का झड़ना शुरू हुआ जो कि बाद में गंजेपन में तब्दील हो गया। ऐसी स्थिति से गुजरती महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी किस स्थिति तक कम होगी, उसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

इसी गांव की रहने वाली लक्ष्मी भी ऐसी ही वजहों से गंजेपन का शिकार हो गई थी। जब वह उस दौर को याद करती हैं तो उनकी आंखों में दर्द छलक आता है। वह बताती हैं कि, यह वह समय था जब पूरा गांव पानी की कमी से जूझ रहा था। तब ही मेरी शादी इस गांव में हुई थी। ससुराल में दशकों तक जीवन में कोई खुशी नहीं थी। इसकी एक मुख्य वजह थी पानी की किल्लत। चाहे तेज गर्मी हो या ठंड, पानी के लिए घर छोड़ना पड़ता था। रात के 12 बजे भी पानी के लिए निकलना पड़ता था। पानी की जरूरत आ गई तो इसके अलावा

उपाय ही कुछ नहीं था। पीने के अलावा दैनिक कार्यों के लिए भी पानी का इंतजाम करना ही पड़ता था। तब हम हर दिन, पानी लेने के लिए छह किलोमीटर की यात्रा करते थे।

वह आगे बताती हैं, पैरों पर फफोले पड़ जाते थे। लेकिन जब मेरे बाल पतले होने लगे और धीरे-धीरे सिर में गंजेपन का धब्बा दिखाई देने लगा, तो पीड़ा बढ़ गई। सिर पर घड़े रखने की वजह से गंजापन हो गया था। मैं शीशे में भी देखना नहीं चाहती थी, मुझे हीनता की भावना ने घेर लिया था।

वह आगे कहती हैं, मेरे लिए अपने सिर पर 'पल्लू' रखने की प्रथा एक मजबूरी बन गई थी। जिन लोगों को मेरे गंजेपन के बारे में पता था वे मुझसे दूरी बनाने लगे थे। कारण तो पता नहीं था, लेकिन उन्हें यह जरूर लगने गया था कि मुझे कोई बीमारी हो गई है। तब मैं खुद को कोसती थी। खुद से ही पूछती थी कि यह कैसा जीवन है? मैं सोचती थी कि अगर मेरे परिवार ने मेरी शादी यहां नहीं की होती तो शायद यह दिक्कत नहीं होती। अगर यह पानी की समस्या नहीं होती, तो मैं गंजेपन का शिकार नहीं बनती। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं कभी पानी की कमी का समाधान देख पाऊंगी।

जल जीवन मिशन से हुई खुशियों की वापसी

मगर इसका समाधान तब निकला, जब हमारे घरों तक पाइपलाइन से जल पहुंचने लगा। हमारे जीवन में जल जीवन मिशन एक वरदान बन गया है क्योंकि यह हमारे जीवन में खुशियां लेकर आया है। अब आने वाली पीढ़ी गंजी नहीं होगी। उन्हें अपने सिर पर घड़े संतुलित नहीं करने होंगे। अब मेरे दरवाजे पर पानी आसानी से उपलब्ध है। अच्छा लगता है। अब किसी को उन कठिनाइयों का सामना नहीं करना होगा, जिनका सामना मैंने और मेरी जैसी गांव की तमाम महिलाओं ने किया है। अब सबके घरों तक पानी की धार पहुंच रही है। यह एक सपने के सच होने जैसा है।

लक्ष्मी

जब पानी की कमी ने ले ली शीला बुआ की जान

कहानी उस महिला की, पानी लाने की मशक्कत में जिसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ा

बुंदेलखंड क्षेत्र के ललितपुर जिले की न जाने की कितनी पीढ़ियां पानी की कमी की वजह से ऐसा दुख सहते बीत गईं, जिसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। पानी के लिए कोई दुर्घटना हो जाए तो भी यहां सामान्य सी बात थी। पानी उनके लिए इतना अनमोल था कि दुखद घटनाएं भी उसके सामने उसे कुछ नहीं लगती थीं। महिलाओं ने पानी लाने में अपनी जान तक गंवाई है। लेकिन पानी के आगे उनकी जान का भी कोई मोल नहीं था। इसी जिले के पाथरी गांव की गोरीबाई इस बात की तस्दीक करती हैं कि उन्होंने अपनी आंखों से वह दौर देखा है। वह कहती हैं कि पानी की कमी इस कदर थी कि बस पानी ही सबसे बड़ी जरूरत थी। उसका इंतजाम हर हाल में करना ही पड़ता है। गोरी बाई की आंखें भर आती हैं। उन्हें अपनी ननद शीलाबाई को खोने का दर्द परेशान करने लगता है। शीला भी पानी लाते वक्त ही एक दुर्घटना का शिकार हो गई थी।

गोरी उस घटना को बताती हैं, गर्मियों की तेज धूप में कुएं से बार-बार पानी लाना बहुत मुश्किल था। इसकी बड़ी वजह यह थी कि कुआं हमसे काफी दूर था। कुएं तक पहुंचने के लिए मीलों पैदल चलना पड़ता था। तेज धूप में तो मानों यह मशक्कत जान ही ले लेती थी। घंटों चलकर थके मांदे जब हम पानी लेने के लिए पहुंचते तो ऐसा तो होता नहीं था कि कुआं खाली हो। पानी की समस्या से जूझ रहे लोग ही इतने होते थे कि सभी को अपनी-अपनी बारी का इंतजार ही करना पड़ता था। इसलिए गांव की महिलाएं कोशिश करती थीं कि वे रात में ही पानी लेने के लिए निकलें। एक रात मेरी ननद भी पानी लेने के लिए गई थी। जब वह वापस आ रही थी तब शरीर पर घड़ों को संतुलित करते वक्त वह फिसलकर गिर गई थी। रात भर दर्द से तड़पती रही, लेकिन उनकी चीख सुनने वाला कोई नहीं था। जब उनसे दर्द

गोरी बाई
पथरी, ललितपुर

बर्दाश्त नहीं हुआ तो वह बेहोश हो गईं।

शीलाबाई के भतीजे, पप्पू को भी यह घटना अच्छी तरह से याद है। वह बताते हैं, सुबह होने पर कुछ लोगों ने मेरी बुआ को देखा और हमें सूचना दी। हम तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे और उन्हें अस्पताल ले गए। डॉक्टरों ने देखा और बताया कि उनकी पीठ की हड्डी टूट गई है। इलाज बहुत महंगा बताया। कहा काफी रकम लगेगी। लेकिन हमने उनके इलाज के लिए सब कुछ किया। बस यही लगा कि पैसा जा रहा है तो कोई बात नहीं, बुआ ठीक तो हो जाएंगी। इलाज में सभी बचत खर्च कर दी। पूर्वजों की जमीन भी गिरवी रख दी। एक बार भी नहीं सोचा कि आगे हमारा क्या होगा। कहां से खाएंगे, कहां से गुजारा होगा। लेकिन इतने खर्च के बाद भी, हम उन्हें नहीं बचा सके। पप्पू कहते हैं कि, बुआ आज भी जीवित होतीं। अगर इसी तरह से हमारे घर में दस साल पहले नल से जल पहुंचने लगता। अगर वैसा हो गया होता तो बुआ तो जिंदा रहती हीं, हमारी बचत भी बची रहती। पुरखों की जमीन भी हमें गिरवी नहीं रखनी पड़ती।

सुमित कटारे
बालाबेहट, ललितपुर

हमें पानी का मोल समझना होगा

पप्पू नल से पहुंच रहे पानी की तरफ देखकर खुश हो जाते हैं। वह कहते हैं, जल जीवन मिशन हमारे लिए एक वरदान की तरह आया है। मेरी बुआ चल बसीं। इसी पानी की कमी की वजह से। अब हमें और हमारी पीढ़ियों को भविष्य में भी इस पानी के लिए बुआ की जद्दोजेहद से न गुजरना पड़े इसलिए हमें पानी का मूल्य समझना होगा। बुआ की तकलीफ हमें पानी को संरक्षित करने के लिए प्रेरित करती है। बताती है कि हमारी पीढ़ी को पानी की कमी के कारण इतनी भयानक स्थितियों का सामना करना पड़ा, लेकिन अब जल जीवन मिशन के साथ, आने वाली पीढ़ियों को उन कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा, जो हमने सहा है। दरवाजे पर नल का पानी वास्तव में एक वरदान से कुछ भी कम नहीं है।

पप्पू
पथरी, ललितपुर

तब पानी अगर सुलभ होता तो शीला की तरह तमाम लोगों की जान नहीं जाती। इसके अलावा कोई दुर्घटनाग्रस्त भी न होता। किसी के जीवन में किसी हादसे की वजह पानी नहीं बनता।

सूरज से मिली जल जीवन को ऊर्जा, पानी भी पहुंचा, पर्यावरण भी सुरक्षित

यूपी की 80% जल जीवन मिशन परियोजनाओं में सोलर पावर का इस्तेमाल, अभिनव प्रयोग के लिए पीएम पुरस्कार से सम्मानित होंगे ACS अनुराग श्रीवास्तव

आदिकाल से ही पानी को जीवन के लिए अमृत कहा जाता रहा है। हालांकि, इस कहावत ने तब मिशन की शक्ल ली, जब पीएम नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त 2019 को जल जीवन मिशन की घोषणा की। स्वतंत्रता दिवस के रोज हुई इस घोषणा में सरकार ने साफ कर दिया था कि यह मिशन गरीबों को पानी की किल्लत से आजादी दिलाने के लिए है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस विजन को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने न केवल समझा, बल्कि एक कदम आगे बढ़ते हुए उपाय किए कि न केवल गरीबों को पानी मिले, बल्कि इस योजना का स्थायित्व भी बना रहे। कोई अड़चन न आए। सृष्टि की ऊर्जा के स्रोत, सूरज की रोशनी को इस मिशन से जोड़ा गया ताकि निर्बाध पानी की आपूर्ति होती रहे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब लाल किले की प्राचीर से जल जीवन मिशन की घोषणा की थी तब उनकी दूरदर्शी परिकल्पना में सभी ग्रामीणों के घरों में नल से पानी पहुंचाना था। यही वजह है कि मिशन का ध्येय वाक्य ही 'हर घर जल' (सभी के लिए पानी) रखा गया था। मिशन का उद्देश्य है कि हर घर में ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड्स (बीआईएस) के मानक के मुताबिक प्रति व्यक्ति रोज 55 लीटर पानी नल से उपलब्ध हो। परिकल्पना की सबसे बड़ी चुनौती यूपी में थी क्योंकि यह देश की सबसे बड़ी आबादी वाला राज्य है और बदलती भौगोलिक परिस्थितियों की मुश्किल भी। हालांकि यूपी को पीएम की इस दूरदर्शी योजना पर खरा उतरना ही था। यह तब और भी जरूरी हो गया था जब उन्होंने साल 2019

सौर ऊर्जा आधारित परियोजना पर एक नजर

33,157

जल जीवन मिशन परियोजनाएं सोलर आधारित

67,013

गांवों तक सोलर आधारित परियोजनाओं से पहुंच रहा स्वच्छ जल

1,67,49,905

परिवारों की संख्या को सोलर परियोजनाओं से मिल रहा स्वच्छ जल

13.30

करोड़ लोगों को सोलर परियोजनाओं से मुहैया हो रहा साफ पानी

900

मेगावाट हो रहा बिजली का उत्पादन जल जीवन मिशन की सोलर परियोजनाओं से रोजाना

में बुंदेलखंड क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए पाइप्ड वॉटर स्कीम की आधारशिला रखी। उस वक्त उन्होंने कहा था कि यह केवल पाइपालइन परियोजना नहीं है, बल्कि क्षेत्र के लिए लाइफलाइन यानी जीवन रेखा है।

उत्तर प्रदेश में 2.66 करोड़ ग्रामीण परिवार रहते हैं। साल 2019 तक केवल 1.94% घरों में ही नल से पानी की सुविधा थी। चुनौती बस इतनी ही नहीं थी कि गरीबों के घर तक पानी पहुंच जाए। इससे ज्यादा बड़ी चुनौती यह थी कि लोगों को इसका लाभ लंबे वक्त तक मिलता रहे।

पानी की कमी की वजह से यूपी में तमाम तरह की दिक्कतें आम थीं। बुंदेलखंड सूखा प्रभावित था। पानी की कमी वहां बनी ही रहती थी। वहीं, पूर्वी उत्तर प्रदेश की स्थितियां इससे कम भयावह नहीं थीं। वहां संक्रमित पानी की वजह से जापानी एंसेफलाइटिस (JE) और एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिंड्रोम (AES) का प्रकोप था। हर साल इनकी चपेट में आकर लोगों की जान जा रही थी। खासकर बच्चों की।

पानी के लिए पहले की योजनाओं का हश्र देखकर पीएम का उद्देश्य पूरा कर पाना इतना आसान नहीं था। क्योंकि पहले जो पानी की योजनाएं शुरू की गई थीं, वे बाद में विफल हो गई थीं। ज्यादातर की वजह पानी सप्लाई करने में बिजली का संकट था। परियोजना की लागत तो बढ़ती ही थी, लेकिन बिजली की अनुपलब्धता या बिजली का खर्च, योजना को नाकाम कर देता था। यानी, बड़ी पूंजी लगाकर तैयार की गई योजना के संचालन में लगने वाला नियमित खर्च, बड़ी चुनौती था। लिहाजा, जल जीवन मिशन ने इस दुश्वारी को समाप्त करने के लिए एक कदम उठाया। उत्तर प्रदेश राज्य जल और स्वच्छता मिशन (SWSM) ने तय किया कि पारंपरिक बिजली की जगह गैरपरंपरागत ऊर्जा स्रोत का इस्तेमाल किया जाएगा।

यूपी में जल जीवन मिशन की 80% परियोजनाएं सोलर आधारित

जल जीवन मिशन में सौर ऊर्जा का प्रयोग कर निर्बाध जलापूर्ति सुनिश्चित करने वाला उत्तर प्रदेश देश के अग्रणी
राज्यों में है। यानी, पानी भी पहुंचेगा, पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा। उत्तर प्रदेश द्वारा किए गए इस अभिनव प्रयोग को अब देश के दूसरे राज्य भी अपना रहे हैं। उत्तर प्रदेश में जल जीवन मिशन की 80 प्रतिशत से अधिक परियोजनाएं सोलर पावर पर आधारित हैं। उत्तर प्रदेश में जल जीवन मिशन के अंतर्गत यूपी में कुल 41539 परियोजनाएं हैं। जिसमें से 33,157 जल जीवन मिशन के प्रोजेक्ट्स में सोलर एनर्जी का उपयोग किया जा रहा है। जिससे रोजाना 900 मेगावाट बिजली पैदा हो रही है। ऐसा करने वाला उत्तर प्रदेश देश का अग्रणी राज्य है।

सोलर तकनीक से पानी निकालने के लिए बिजली का खर्च 50 प्रतिशत से भी होगा कम

सोलर तकनीक के इस्तेमाल से गांवों में की जाने वाली जलापूर्ति की लागत में 50 प्रतिशत से अधिक की कमी आई है। साथ ही पानी की सप्लाई के लिए इलेक्ट्रिसिटी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। लो मेंटेनेंस के साथ-साथ इन सौर ऊर्जा संयंत्रों की आयु 30 साल होती है। 30 साल के दौरान इन परियोजनाओं का संचालन सौर ऊर्जा के जरिए होने से करीब 1 लाख करोड़ रुपये की बचत होगी। इससे करीब 13 लाख मीट्रिक टन कार्बन डाई ऑक्साइड का इमिशन प्रतिवर्ष कम होगा। इतना ही नहीं परियोजनाओं को सफल रूप से चलाने के लिए ग्रामीण इलाकों में स्थानीय स्तर पर सोलर आधारित पंप चलाने की ट्रेनिंग भी दी गई है। प्रदेश भर में 12.50 लाख लोगों को इसकी ट्रेनिंग दी गई है। ट्रेनिंग पाने वाले ग्रामीण ही इन परियोजनाओं का संचालन और सुरक्षा करेंगे।

बढ़े सौर ऊर्जा की ओर बढ़े कदम

जाहिर है कि ऐसी चुनौतियों से निपटने के लिए पारंपरिक दृष्टिकोण को छोड़ना ही था। तमाम उपायों पर मंथन हुआ और आखिरकार समाधान मिला। तय हुआ कि ऊर्जा के खर्चीले पारंपरिक स्रोत को छोड़कर सौर ऊर्जा की तरफ बढ़ा जाए। सौर ऊर्जा की तरफ बढ़ने के पहले इसके सभी आयामों पर विस्तृत चर्चा हुई और अध्ययन भी हुआ।

निर्णय के बाद 33,157 सौर-ऊर्जा-संचालित पानी की आपूर्ति परियोजनाएं अस्तित्व में आईं। इनसे मौजूदा समय में तकरीबन 900 मेगावॉट ऊर्जा उत्पादित की जा रही है। इन परियोजनाओं को धीरे-धीरे प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में शुरू किया गया। इसका विस्तार 67,013 गांव, 2.07 करोड़ घरों और 13.30 करोड़ आबादी तक है। दूरस्थ क्षेत्रों में अच्छी पहुंच की वजह से यह परियोजना गेम चेंजर साबित हुई। परियोजनाएं शुरू होते ही इनके लाभ आने शुरू हो गए हैं।

लागत, संचालन और कार्बन फुटप्रिंट्स में आई कमी

सौर ऊर्जा के इस्तेमाल से परियोजनाओं के संचालन और उनकी रखरखाव लागत में तो कमी आई ही, लेकिन इससे भी ज्यादा फायदा यह रहा कि ये परियोजनाएं पर्यावरण के अनुकूल थीं। पारंपरिक बिजली उत्पादन

Expenditure on Operation & Maintenance per Household

S.No	Types of Schemes	Total No.Of Schemes	No. of Villages	No. of Households	Estimated annual O s M cost Per Households (in Rs)
01	Solar based schemes	33,157	67,013	1,67,49,905	1220
02	Electricity based schemes	10,985	29,908	98,33,346	2531

की जगह सौर ऊर्जा से बिजली उत्पादन में कार्बन फुटप्रिंट्स में कमी आती है। इस तरह से इनकी वजह से पर्यावरण पर न के बराबर प्रभाव पड़ता है। ऐसे में ये अधिक विश्वसनीय और उपयोगी हैं। पानी की सप्लाई के लिए सौर ऊर्जा आधारित परियोजनाओं के संचालन से जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम हुई है। इससे ग्लोबल वॉर्मिंग सरीखी गंभीर समस्या से बचने के लिए अपनाए जा रहे उपायों को बल मिला है। 33,157 परियोजनाओं को चलाने के लिए 900 मेगावॉट सौर ऊर्जा का उत्पादन किया जा रहा है। अगर सोलर प्लांट नहीं होते तो इतनी ही क्षमता की ऊर्जा नैशनल पावर ग्रिड से लेनी पड़ती। ये परियोजनाएं 30 साल की फिजिबिलिटी पर डिजाइन की गई हैं, जिनपर कुल लागत 7812 करोड़ रुपये आई है। अगर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों का इस्तेमाल किया जाता तो लागत 2487 करोड़ रुपये आती। इसके अलावा बिलों पर सालाना 1115 करोड़ रुपये का खर्च आता। एक आकलन के मुताबिक 30 साल में 28,112 करोड़ रुपये की बचत होगी। बचत की रकम का यह आकलन तब है जब बिजली की दरें न बढ़ें। अगर सालाना टैरिफ में 2 प्रतिशत का इजाफा मान लिया जाए तो यह बचत 37,395 करोड़ रुपये की होगी।

सौर योजनाएं, कार्बन क्रेडिट और 'शुद्ध शून्य' उत्सर्जन लक्ष्य

पारंपरिक ऊर्जा के प्रयोग की तुलना में इन सौर ऊर्जा आधारित परियोजनाओं से सालाना 13 लाख मीट्रिक टन कम कार्बन डाई ऑक्साइड (CO2) उत्सर्जित होगी। यानी, करीब 13 लाख कार्बन क्रेडिट। ऐसे समय जब देश ने 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य रखा है, तब यह परियोजनाएं देश के कार्बन क्रेडिट में बड़ा योगदान देती दिख रही हैं।
अगर हर कार्बन क्रेडिट की कीमत 2 अमेरिकी डॉलर मान लें तो इसका मूल्य 78 मिलियन यूएस डॉलर हुआ। लगभग 624 करोड़ रुपये। सौर ऊर्जा संचालित योजनाएं आत्मनिर्भर हैं और इनके लिए किसी भी प्राधिकरण से अनापत्ति प्रमाण पत्र की जरूरत नहीं होती है। परियोजनाओं के लिए अतिरिक्त जमीन की भी जरूरत नहीं होती क्योंकि सोलर प्लांट्स परियोजनाओं के परिसर में ही लगते हैं।

बिजली उत्पादन और उनके वितरण की ऊंची कीमतों को बचाने के अलावा सौर परियोजनाएं तेजी से खत्म होते कोयले के भंडार को बचा भी रही हैं। ये जलविद्युत शक्ति और परमाणु ऊर्जा से भी बेहतरी हैं क्योंकि दोनों की अपनी सीमाएं हैं।

लचीली और आत्मनिर्भर

सौर ऊर्जा संचालित नवाचार आपातकालीन स्थितियों में भी बहुत टिकाऊ साबित हुआ है। ये संरचनाएं भूकंप-

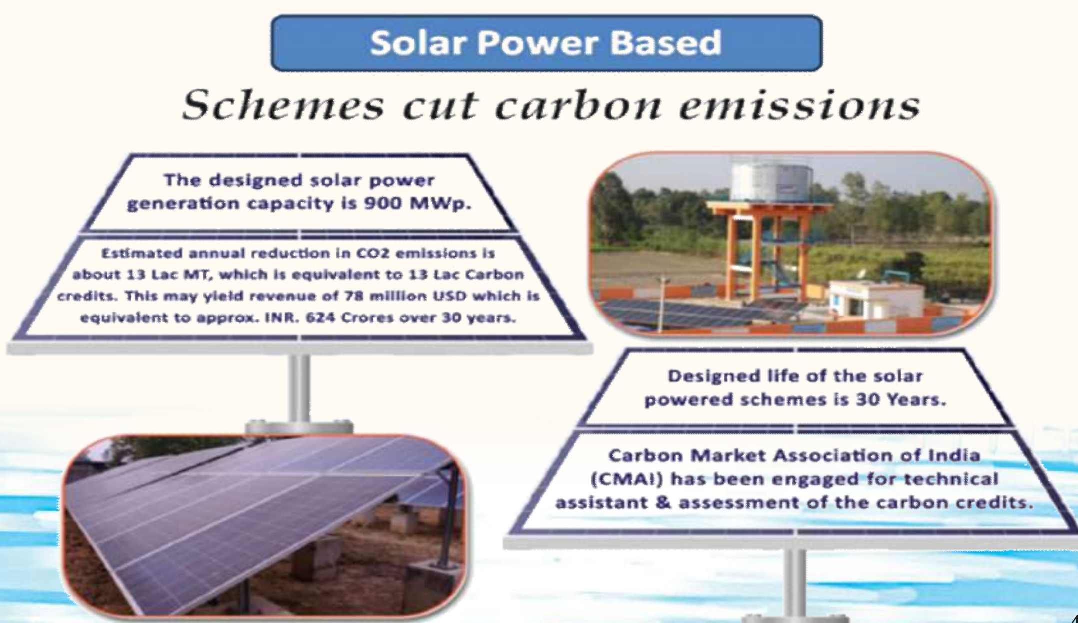

प्रतिरोधी हैं और तेज दबाव वाले तूफानों को भी सह सकती हैं। भूकंप और बदलती जलवायु परिस्थितियों का इनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। उत्तर प्रदेश में तेज हवाओं के कारण बिजली की लाइनें अक्सर क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, ऐसे में यह प्रणाली और भी उपयोगी हो जाती है। इसके अलावा, यदि साइट का चुनाव सही तरह से किया गया है तो बाढ़ के दौरान भी सौर आधारित प्रणालियों को कोई खतरा नहीं होता।

योजना के हितधारक/ लाभार्थी

सौर आधारित पानी की आपूर्ति योजनाओं की योजना बनाते वक्त विभिन्न स्तरों पर चर्चा हुई, जिसमें ग्राम जल समितियां, राज्य जल और स्वच्छता मिशन (एसडब्ल्यूएसएम), जिला जल और स्वच्छता मिशन (डीडब्ल्यूएसएम) शामिल थीं। शीर्ष स्तर पर इन चर्चाओं को लेकर और भी मंथन हुए तब जाकर परियोजना का अंतिम स्वरूप तय किया गया। बिजली आपूर्ति की चुनौतियों को देखते हुए सभी लाभार्थी सौर ऊर्जा अपनाने के प्रबल समर्थक रहे। एसडब्ल्यूएसएम - उत्तर प्रदेश ने परियोजना की प्लानिंग चरणबद्ध तरीके से की। पूरे प्रोजेक्ट क्षेत्र को क्लस्टर और जिलों में बांटा गया। प्रतिष्ठित एजेंसियों और वेंडर को एक पारदर्शी टेंडर प्रणाली के माध्यम से परियोजना में शामिल किया गया। 10 साल की संचालन और रखरखाव (ओ एंड एम) अवधि के साथ अनुबंध किए गए, ताकि योजनाओं की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित की जा सके। सौर ऊर्जा आधारित योजनाओं के हितधारक राष्ट्रीय जल जीवन मिशन के माध्यम से भारत सरकार, एसडब्ल्यूएसएम, उत्तर प्रदेश के माध्यम से राज्य सरकार हैं। निष्पादन एजेंसी उत्तर प्रदेश जल निगम (ग्रामीण) है, जबकि जेजेएम के कार्यों को निष्पादित करने वाले ठेकेदार और फर्म, तृतीय पक्ष निरीक्षण एजेंसियां (टीपीआईए), परियोजना प्रबंधन परामर्शदाता (पीएमसी) और उत्तर प्रदेश की ग्राम पंचायतें हैं - जो सभी योजना के महत्वपूर्ण घटक हैं। इनका उद्देश्य सभी के लिए उनके दरवाजे पर पानी की सुलभता सुनिश्चित करना है। लाभार्थियों में उत्तर प्रदेश की लगभग 17 करोड़ ग्रामीण आबादी, स्कूल, आंगनवाड़ी, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और कार्बन/ग्रीन क्रेडिट डिवेलपर्स जैसे ग्राम स्तर के सार्वजनिक संस्थान शामिल हैं।

हितधारकों ने सौर ऊर्जा संचालित योजनाओं के लाभ, जैसे- बिना रुकावट पेयजल आपूर्ति, संचालन और प्रबंधन लागत में कमी, कार्बन फुटप्रिंट में कमी और पर्यावरणीय अनुकूलता को देखते हुए, ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल योजनाओं को चलाने में सौर ऊर्जा को अपनाने के लिए तैयार हुए।

विजन किया साझा, ताकि और भी लोग अपनाएं

जल आपूर्ति योजनाओं में सौर ऊर्जा के उपयोग से ग्रामीण ग्रामीण आबादी को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल होने और गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम करने की दिशा में जागरूक किया है। सौर आधारित जल योजनाओं के कार्यान्वयन के बाद कई सर्वोत्तम प्रथाएं की पहचान की गई, जिन्हें दूसरे क्षेत्रों में भी अपनाया जा सकता है। गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से सौर ऊर्जा की तरफ जाने के बाद यह महसूस हुआ कि अगर ग्राम पंचायतें इसका इस्तेमाल करें तो वे अपने बिजली के बिलों के बोझ को कम या खत्म कर सकती हैं। यही पिछली योजनाओं की विफलता का सबसे बड़ा कारण था

उत्तर प्रदेश के लखनऊ में सरथुआ ग्राम पंचायत में सौर ऊर्जा आधारित पंप हाउस।

क्योंकि ग्राम पंचायतें उन योजनाओं को चलाने के लिए जरूरी बिजली बिलों का भुगतान करने में असमर्थ थीं।

इसके अलावा और भी तमाम लाभ सामने दिखे। उदाहरण के लिए, सौर आधारित जल आपूर्ति योजनाएं दूरस्थ क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से काम करती हैं, जहां पारंपरिक ऊर्जा/गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की पहुंच नहीं है। प्रतिकूल मौसम में भी ये चलती रह सकती हैं, जिससे कि पानी की आपूर्ति सुनिश्चित रखी जा सकती है। यही कारण है कि इसे एकल या बहु-ग्राम योजनाओं में भूजल आधारित योजनाओं में प्रयोग किया गया है, जहां ऊर्जा की आवश्यकताओं को किसी अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता के बिना पूरा किया जा सकता है।

इन योजनाओं ने इस प्रकार गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर आधारित उच्च लागत वाले ईंधन या बिजली की आवश्यकता को समाप्त करके संचालन और रखरखाव की लागत को कम किया है। जिससे दीर्घकालिक बचत होती है और परियोजनाएं वित्तीय रूप से स्थित रहती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कार्बन क्रेडिट बेचकर, राज्य अतिरिक्त राजस्व प्राप्त कर सकता है। इस मॉडल को अन्य राज्य भी अपना सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से हम तय समय के पहले कार्बन न्यूट्रल स्टेटस प्राप्त कर सकते हैं। उत्तर प्रदेश में नमामि गंगे और ग्रामीण जल आपूर्ति विभाग ने इस मॉडल को कई सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांटों में अपनाना शुरू कर दिया है। कुछ एसटीपी नमामि गंगे नमामि गंगे और ग्रामीण जल आपूर्ति विभाग के कार्यक्रम के तहत इस तरह से तैयार किए गए हैं कि वे अपनी पूरी जरूरत सौर ऊर्जा से पूरी कर सकते हैं। जलापूर्ति के लिए सौर आधारित मॉडल का इस्तेमाल सभी सार्वजनिक और निजी भवनों की छतों पर किया जा सकता है। अगर इसे ग्रिड से जोड़ दिया जाए तो इससे ग्रीन एनर्जी का उत्पादन भी किया जा सकता है। पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ ही इस मॉडल को अपनाकर और कार्बन क्रेडिट को अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बेचकर विभाग राजस्व भी अर्जित कर सकते हैं।

जनसांख्यिकीय और भौगोलिक पहुंच

बड़ी आबादी और विभिन्न भौगोलिक परिदृश्यों की वजह से उत्तर प्रदेश में जलापूर्ति एक बड़ी चुनौती है। खासकर दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में। सौर ऊर्जा संचालित जल आपूर्ति योजनाएं विशेष रूप से ऐसे दूरस्थ और ऑफ-ग्रिड क्षेत्रों में फायदेमंद साबित हुई हैं, जहां पारंपरिक बिजली ढांचा या तो उपलब्ध नहीं है वहां बेहद मुश्किल है।

जलापूर्ति में सौर ऊर्जा का इस्तेमाल एक क्रांतिकारी परिवर्तन रहा है। प्रदेश के 75 जिलों के 826 ब्लॉक, 58,287 पंचायतों और 96,921 गांवों में फैली 44,142 जल आपूर्ति योजनाओं का विस्तार इसकी कहानी खुद ब खुद कहता है। पीने के पानी के लिए क्लीन एनर्जी का इस्तेमाल तो हो ही रहा है, बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर भी खुल रहे हैं।

ऐसे क्षेत्र जहां बिजली की पहुंच व्यावहारिक नहीं है, वहां इस मॉडल का इस्तेमाल लोग अपने घरेलू उपकरणों के लिए भी कर सकते हैं।

हितधारकों/लाभार्थियों की क्षमता निर्माण

अब तक, सौर जल प्रणालियों के संचालन और रखरखाव के विभिन्न पहलुओं में 12.36

उत्तर प्रदेश के सीतापुर की वर्मी ग्राम पंचायत में सौर ऊर्जा आधारित पंप हाउस

लाख से अधिक लोगों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। इनमें प्लंबर, पंप ऑपरेटर और जल गुणवत्ता परीक्षण में शामिल महिलाएं शामिल हैं। इससे न केवल रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं, बल्कि स्थानीय लोग जल आपूर्ति प्रणालियों की मलकियत लेने में समर्थ भी हुए हैं। इससे परियोजनाओं की दीर्घकालिकता भी सुनिश्चित हुई है। हितधारकों को कार्बन फुटप्रिंट में कमी, स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार सृजन, और विभिन्न सूचना, शिक्षा और संचार गतिविधियों के माध्यम से विभिन्न जानकारी, शिक्षा और संचार गतिविधियों जैसे दीवार-लेखन, होर्डिंग, एलईडी वैन, नुक्कड़ नाटक, रेडियो जिंगल, टेलीविजन प्रसारण, मूवी हॉल में मीडिया प्रमोशन, रोड शो, ग्रामीण मेले, छात्रों द्वारा रैली के माध्यम से विभिन्न गतिविधियों के महत्व के बारे में संवेदनशील बनाया गया है। लाभार्थियों, ग्राम स्तर के अधिकारियों और ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों के लिए दूरस्थ या दुर्गम क्षेत्रों में कार्यशालाएं और वेबिनार आयोजित किए गए हैं। नल जल मित्र (टैप वॉटर फ्रेंड्स) को सौर प्रणालियों के रखरखाव के लिए भी प्रशिक्षित किया जा रहा है। हितधारकों और लाभार्थियों की क्षमता निर्माण के प्रयास भी शुरू किए गए हैं ताकि वे सौर ऊर्जा नवाचार के परिचय के माध्यम से लाभान्वित हो सकें।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली अधिक प्रतिक्रियाशील हो जाती है

सौर ऊर्जा आधारित योजना ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली को अधिक जवाबदेह और कुशल बना दिया है क्योंकि इसने नियमित जल आपूर्ति प्रदान करने की विश्वसनीयता में सुधार किया है। इसमें ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन के दौरान होने वाली ऊर्जा हानियां नहीं होतीं क्योंकि सौर ऊर्जा प्रणाली उसी परिसर में है, जहां से पानी के काम होने हैं। सौर ऊर्जा से उत्पादित होने वाली हरित ऊर्जा पर्यावरण के लिए भी बेहतर है।

उत्तर प्रदेश की सौर ऊर्जा संचालित जल आपूर्ति योजनाओं के एक और खास बात यह है कि इसमें पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा अधिग्रहण (एससीएडीए) प्रणालियों को एकीकृत कर दिया गया है। एससीएडीए से रियल टाइम मॉनीटरिंग हो सकती है। इसके अलावा वायरलेस कम्युनिकेशन के तहत स्वतः संचालन भी किया जा सकता है।

स्वचालित निगरानी डैशबोर्ड जल आपूर्ति से जुड़े हर पहलू की निगरानी की जा सकती है और अगर कहीं भी कोई कमी दिखती है तो इसके माध्यम से तत्काल दूर करने की प्रक्रिया शुरू

की जा सकती है। केंद्रीकृत एससीएडीए प्रणाली न केवल बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित करती है बल्कि संसाधनों की बर्बादी और खराबी के दौरान बंदी के समय को भी कम करने में मदद करती है। महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं को स्वचालित किए जाने से मैनुअल पर्यवेक्षण में लगने वाला समय बचाया जा सकता है। इससे संसाधनों की तो बर्बादी कम होती ही है, उसपर आने वाला खर्च भी कम हो जाता है।

योजना के अन्य लाभों में विकेंद्रीकृत ऊर्जा उत्पादन, जलापूर्ति के लिए निर्बाध बिजली आपूर्ति, भारत के सतत विकास लक्ष्य की प्राप्ति, कार्बन या हरित क्रेडिट के माध्यम से 'जलवायु वित्त' उत्पन्न करना आदि शामिल है।

सौर योजनाओं का तृतीय पक्ष मूल्यांकन

सौर ऊर्जा आधारित परियोजनाएं शुरू होने के बाद कार्बन फुटप्रिंट में आई कमी के लिए थर्ड पार्टी मूल्यांकन के प्राविधान किए गए हैं। इसके लिए तकनीकी सहयोग कार्बन मार्केट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सीएमएआई) से लिया जा रहा है। सीएमएआई हरित ऊर्जा के उत्पादन, कार्बन क्रेडिट प्राप्त करने की प्रक्रिया और फिर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कार्बन क्रेडिट प्रमाण पत्रों के उपयोग के संबंध में परियोजनाओं का मूल्यांकन करेगा। यह भारत को कार्बन न्यूट्रल स्थिति प्राप्त करने में मदद करने में एक भूमिका निभाएगा।

टूलकिट प्राविधान

सौर नवाचार का आसानी से अनुकरण किया जा सके, इसके लिए एक टूलकिट तैयार की गई है। इसमें योजनाओं में विशेष स्थिति का आकलन और बड़े पैमाने पर अध्ययन शामिल है। इसमें परियोजना विकास सर्वेक्षण, डेटा संग्रह, विश्लेषण और अंतर कम करने, योजनाओं के डिजाइन और ग्राफिकल प्रस्तुतियों भी शामिल हैं।

33157 योजनाओं में से, 22425 को सौर आधारित बिजली के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया गया है और वे निर्बाध और कुशलता से चल रही हैं। इसमें क्षमता निर्माण मॉड्यूल, वित्तीय मॉडल, सर्वोत्तम प्रथाओं का मैनुअल, अनुबंध दस्तावेज और कार्बन क्रेडिट का व्यापार कैसे करें, इसके बारे में जानकारी शामिल है।

ज्ञान साझाकरण

जिला/राज्य/केंद्र सरकार को अपनी सर्वोत्तम प्रथाओं को प्रसारित करने के लिए कार्यान्वयन इकाई द्वारा कदम उठाए गए हैं। प्रसार में विस्तृत भौतिक और वित्तीय प्रगति प्रदान करने के लिए ऑनलाइन पोर्टल शामिल है, जिसे परियोजना घटकों और इससे संबंधित प्रगति के समग्र परिदृश्य को आसानी से समझने के लिए संदर्भित किया जा सकता है। सर्वोत्तम प्रथाओं का एक व्यापक दस्तावेज भी तैयार किया गया है, जिसमें परियोजना के कार्यान्वयन के दौरान योजना, कार्यान्वयन से लेकर परियोजना के रखरखाव

तक देखी गईं छोटी-छोटी बातें शामिल हैं।

प्रसिद्ध सरकारी तकनीकी संस्थानों के साथ सहयोग किया गया है और उनकी प्रतिक्रिया को शामिल किया गया है। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और वेब मीटिंग के माध्यम से सभी हितधारकों के साथ नियमित रूप से वेबिनार आयोजित किए जाते हैं।

नियमित प्रगति रिपोर्ट और तकनीकी समाधानों का संकलन और प्रस्तुतिकरण नियमित एक पोर्टल पर अपलोड किया जाता है और उसे सभी हितधारकों के साथ साझा किया जाता है। मीडिया को भी साथ लिया गया है और उनके साथ सफलता की कहानियां साझा की जाती हैं ताकि योजनाओं/परियोजनाओं के सकारात्मक प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक किया जा सके। सभी योजनाओं के लिए दिशानिर्देश और मैनुअल भी विकसित किए गए हैं।

सौर ऊर्जा आधारित योजनाओं में सामुदायिक भागीदारी

ग्राम जल समिति ने ही जल आपूर्ति योजनाएं तैयार कीं समिति के सदस्यों के साथ चर्चा के बाद ही सौर प्रणाली को किया गया है। जल गुणवत्ता परीक्षण, प्लंबर, फिटर और मैकेनिक के लिए लगभग 12.36 लाख स्थानीय महिलाओं को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया और सौर प्रणाली के रखरखाव और संचालन के लिए शामिल किया गया। उन्हें जल आपूर्ति योजनाओं को बनाए रखने के महत्व के बारे में बताया गया।

इसके अलावा, कार्यान्वयन समर्थन एजेंसियों और आईईसी एजेंसियों के माध्यम से ग्रामीणों का मनोबल बढ़ाया गया। उन्हें समझाया गया है कि उन्हें क्या-क्या करना है ताकि योजना चलती रहे।

शिकायत निवारण, प्रतिक्रिया तंत्र

प्रत्येक जल आपूर्ति योजना में शिकायत निवारण सेल बने हैं। ग्रामीण संपर्क बिंदुओं पर पहुंचकर, टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबर (18001212164) के माध्यम से और ऑनलाइन पोर्टल से अपनी शिकायतें दर्ज करवा सकते हैं। इसके लिए एक मोबाइल ऐप भी विकसित किया जा रहा है।

शिकायतें आने पर शिकायत निवारण अधिकारियों को एक निश्चित समय के भीतर समस्याओं को दूर करवाने की जिम्मेदारी दी गई है। समय-समय पर विभिन्न आईईसी गतिविधियों के माध्यम से शिकायत निवारण और प्रतिक्रिया तंत्र के बारे में जन जागरूकता अभियान भी चलाए जा रहे हैं। शिकायत समाधान तंत्र की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए नियमित निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली भी स्थापित की गई है।

दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करना

सौर ऊर्जा आधारित जल योजनाएं लगभग 30 वर्षों के लिए डिज़ाइन की गई हैं। ऐसे में इनकी स्थिरता सुनिश्चित है। पेयजल योजनाएं निर्बाध बिजली आपूर्ति के साथ ही डिजाइन की गई हैं, ऐसे में कोई दिक्कत नहीं आती। इसके अतिरिक्त जिन ठेकेदारों को योजनाओं के लिए टेंडर किया गया है, उन्हें दस साल तक योजनाओं के संचालन की जिम्मेदारी भी दी गई है।

लखनऊ के भावा खेड़ा ग्राम पंचायत में निरीक्षण के दौरान सोलर पैनल की जानकारी लेते अधिकारी

लखनऊ के उदयपुर ग्राम पंचायत में सौर ऊर्जा से चलने वाले पंप हाउस। क्षेत्र की महिलाएं अपनी खुशी व्यक्त करती हैं क्योंकि अब उनके लिए 'बिजली नहीं' का मतलब 'पानी नहीं' नहीं है।

चुनौतियाँ और भविष्य के दृष्टिकोण

यद्यपि सौर ऊर्जा संचालित जल आपूर्ति योजनाओं के तमाम लाभ हैं, लेकिन कुछ चुनौतियां अब भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती सर्दी और बरसात के मौसम की है, जब सौर ऊर्जा से नियमित उत्पादन प्रभावित हो जाता है।

इसके अलावा, दूरदराज के क्षेत्रों में सौर ऊर्जा के बुनियादी ढांचे का प्रबंधन करते वक्त काफी महीनता से योजना तैयार करनी पड़ती है और भविष्य में आ सकने वाली दिक्कतों का पहले से अनुमान करना पड़ता है। इन चुनौतियों के बावजूद, उत्तर प्रदेश की जलापूर्ति का सोलर मॉडल अन्य प्रदेशों और दूसरे देशों के लिए अनुकरणीय है।

खराब मौसम की स्थिति में चुनौतियों को कम करने के लिए पोर्टेबल डीजल जेनरेटरों की व्यवस्था की गई है ताकि निर्बाध जलापूर्ति सुनिश्चित रह सके। इसके अलावा, सभी सौर ऊर्जा संचालित जल आपूर्ति योजनाओं के लिए जल वितरण प्रणाली गुरुत्वाकर्षण के आधार पर डिजाइन की गई है। नतीजतन केलव ऊंचे भंडाण जलाशयों (ईएसआर) को भरने के लिए ही बिजली की आवश्यकता होती है। सर्दियों के मौसम में, ईएसआर को दिन के उजाले के दौरान भरा जा सकता है। यह सुनिश्चित करता है कि प्रणाली खराब मौसम की स्थिति में भी काम कर सकती है।

सुरक्षा को और मजबूत करने के लिए, सौर पैनल एक गेटेड, सुरक्षित परिसर में स्थापित किए गए हैं। चोरी या किसी भी तरह के नुकसान की आशंका न रहे इसके लिए 24 घंटे सुरक्षा कर्मियों की तैनाती की गई है। इसके अलावा, चोरी और नुकसान पहुंचाने की घटनाओं को रोकने के लिए ग्रामीणों को जागरूक किया गया है। ग्राम जल और स्वच्छता समितियों (वीडब्ल्यूएससी) को भी योजनाओं का समर्थन करने, उनकी रक्षा करने और उन्हें बनाए रखने के लिए अधिकृत किया गया है, ताकि परियोजना पर समुदाय का स्वामित्व बढ़े।

निष्कर्ष

यह महत्वाकांक्षी परियोजना अन्य राज्यों और देशों के लिए एक मॉडल के रूप में खड़ी है जो ग्रामीण जल आपूर्ति और अक्षय ऊर्जा को अपनाने में एक जैस ही चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। बुनियादी ढांचे को तैयार करने में आने वाली चुनौतियों से निपटकर उत्तर प्रदेश ने अन्य राज्यों को दिशा दिखाई है। उन्हें बताया है कि कैसे कम लागत में परियोजनाएं तैयार हो सकती हैं, जो पर्यावरण के भी अनुकूल हों। यूपी में जल जीवन मिशन ने सतत ग्रामीण विकास के नए मानक स्थापित किए हैं। इस परियोजना से सबक लेकर हम भविष्य की योजनाओं का ब्लूप्रिंट तैयार कर सकते हैं।

उत्तर प्रदेश में सौर-आधारित पेयजल योजनाओं का भविष्य आशाजनक लगता है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी आगे

बढ़ेगी लागत और भी कम हो जाएगी और सौर ऊर्जा संचालित जल आपूर्ति प्रणालियों की व्यावाहारिकता बढ़ाई जा सकेगी। राज्य अक्षय ऊर्जा के लिए प्रतिबद्ध है और जलापूर्ति के लिए भी। दोनों के एक साथ मिलने से इस क्षेत्र में निवेश के अवसर तैयार हो रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव जल संसाधनों पर पड़ते हैं। लिहाजा सौर ऊर्जा जैसे सतत समाधानों को अपनाना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। नवाचार, सामुदायिक भागीदारी और मजबूत साझेदारी पर ध्यान केंद्रित करके, उत्तर प्रदेश अपने सभी निवासियों को स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल तक पहुंच सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। सार में हम कह सकते हैं कि जल जीवन मिशन - उत्तर प्रदेश ने ग्रामीण जल आपूर्ति की चुनौतियों को हल करने में अक्षय ऊर्जा का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। लोगों तक पानी की उपलब्धता, परिचालन लागत में कमी, कार्बन फुटप्रिंट में कमी, और सामुदायिक सशक्तीकरण वे पहलू हैं, जो साफ तौर पर परियोजना की सफलता की कहानी कहते हैं।

जैसे-जैसे भारत में सौर ऊर्जा के उपयोग का विस्तार होगा, भारत स्थायी विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने और वैश्विक जलवायु कार्रवाई में योगदान देने में अक्षय ऊर्जा समाधानों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करेगा। यह पहल एक प्रतिष्ठित मॉडल के रूप में स्थापित हो चुकी है। यह सतत विकास के लिए जल आपूर्ति और ऊर्जा प्रणालियों को जोड़कर भविष्य के लिए तमाम नवाचारों का मंच तैयार करेगी।

जल जीवन मिशन
पम्प हाउस
जल जीवन का है मूल आधार
इसे बचाने का करो विचार !

Quenching the Thirst

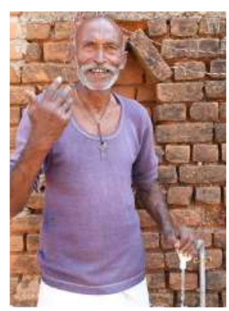

जल जीवन मिशन के तहत सबसे अधिक नल कनेक्शन देने वाला भारत का नम्बर 1 राज्य

State Water and Sanitation Mission

Namami Gange & Rural Water Supply Department

@upswsm @upswsm1 @upswsm @upswsm @upswsm www.jalsamadhan.in 18001212164

email: ed.swsmup@rediffmail.com

website: http://www.swsm.up.gov.in, https://Jjm.up.gov.in

Helpline Toll Free No. 18001212164